****

TRIYODASH KAVACH SANGRAH

(Sanskrit)

****

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

अमोघ शिवकवचम्

यह अमोघ शिव कवच परम गोपनीय, समस्त पापों को दूर करने वाला, सारे अमंगलों को, विघ्न-बाधाओं को नष्ट करने वाला, परमपवित्र, जय प्रदायक और समस्त विपत्तियों का नाश करने वाला माना गया है। यह परम हितकारी है और समस्त भयों को दूर करता है। इस कवच के प्रभाव से क्षीणायु, मृत्यु के मुख में पहुंचा हुआ रोगी मनुष्य भी शीघ्र निरोगता को प्राप्त करता है और उसकी दीर्घायु हो जाती है। आर्थिक रूप से पीड़ित मनुष्य की सारी दरिद्रता दूर हो जाती है और उसको सुख-वैभव की प्राप्ति होती है। पापी महापातक से छूट जाता है और इसको भक्ति-श्रद्धा पूर्वक धारण करने वाला निष्काम पुरुष मृत्यु के बाद दुर्लभ मोक्षपद को प्राप्त होता है।

महर्षि ऋषभ ने इसका उपदेश करके एक संकटग्रस्त राजा को दुःख मुक्त किया था। यह कवच श्रीस्कन्दपुराण के ब्रह्मोत्तर खण्ड में है।

पहले विनियोग छोड़कर ऋष्यादिन्यास, करन्यास और हृदयादि अङ्गन्यास करके भगवान् शंकर का ध्यान करें। (इसके

पश्चात् कवच का पाठ करें।)

अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसदाशिवरुद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः, वं कीलकम्, श्रीं ह्रीं क्लीं बीजम् सदाशिवप्रीत्यर्थे शिवकवचस्तोत्रजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ब्रह्मऋष्ये नमः, शिरसि।
अनुष्टुप् छन्दसे नमः, मुखे।
श्रीसदाशिवरुद्रदेवतायै नमः, हृदि।
ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः।
वं कीलकात नमः, नाभौ।
श्रीं ह्रीं क्लीमिति बीजाय नमः, गुह्ये।
विनियोगाय नमः, सर्वांगे।

अथ करन्यासः

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ ह्रीं रां सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ नं रीं नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने तर्जनीभ्यां स्वाहा।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ मं रूं अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने मध्यमाभ्यां वषट्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ शिं रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने अनामिकाभ्यां हुम्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ वां रौं अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ यं रः अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयाद्यंगन्यासः

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ ह्रीं रां सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने हृदयाय नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ नं रीं नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने शिरसे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ मं रूं अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने शिखायै वषट्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ शिं रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने कवचाय हुम्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ वां रौं

अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्जवालामालिने ॐ यं रः अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

वज्रदंष्ट्रं त्रिनयनं कालकण्ठमरिंदमम्।
सहस्त्रकरमप्युग्रं वन्दे शम्भुमुमापतिम्॥

जिनकी दाढ़ें वज्र के समान हैं, जो तीन नेत्र धारण करते हैं, जिनके कंठ में हलाहल (विष) पान का नील चिन्ह सुशोभित होता है, जो शत्रुभाव रखने वालों का दमन करते हैं, जिनके सहस्रों कर (हजारों हाथ अथवा किरणें) हैं तथा जो अभक्तों (पापियों) के लिए अत्यन्त उग्र हैं, उन उमापति शम्भु को मैं प्रणाम करता हूं।

ऋषभ उवाच:

अथापरं सर्वपुराणगुह्यं
नि:शेषपापौघहरं पवित्रम्।
जयप्रदं सर्वविपद्विमोचनं
वक्ष्यामिश्विं कवचं हिताय ते॥

नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरम्।
वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम्॥१॥

ऋषभ जी कहते हैं- जो सारे पुराणों में परम गोपनीय कहा गया है, समस्त पापों को दूर करने वाला है, पवित्र, जयप्रदायक तथा समस्त विपत्तियों से मुक्ति दिलवाने वाला है, उस सर्वश्रेष्ठ शिव कवच का मैं तुम्हारे हित (भलाई) के लिए उपदेश करूंगा।

मैं विश्वव्यापी भगवान् महादेव जी को नमस्कार करके मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा करने वाले इस शिवस्वरूप कवच का (मैं) वर्णन करता हूं।

शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः।
जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम्।२।

शुद्ध व पवित्र स्थान में यथायोग्य आसन बिछाकर बैठे, समस्त इन्द्रियों को अपने नियंत्रण में करके, प्राणायाम पूर्वक अविनाशी भगवान् शिव का ध्यान करे।

हृत्पुण्डरीकांतरसंनिविष्टं
स्वतेजसा व्याप्तनभोऽऽकाशम्।

अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं

ध्यायेत् परमानंदमयं महेशम्।३।

परमानन्दमय भगवान् महेश्वर हृदय-कमल के अंदर की कर्णिका में विराजमान हैं, उन्होंने अपने तेज से आकाशमण्डल को व्याप्त कर रखा है। वे इन्द्रियातीत, सूक्ष्म, अनन्त एवं सबके आदि कारण हैं। इस तरह से जानकर हम उनका ध्यान करें।

ध्यानावधूताखिलकर्मबन्ध-

श्चिरं चिदानंदनिमग्नचेताः।

षडक्षरन्याससमाहितात्मा

शैवेन कुर्यात् कवचेन रक्षाम्।४।

इस प्रकार ध्यान के द्वारा समस्त कर्मबंधनों को नष्ट करके चिदानन्दमय भगवान् सदाशिव में अपने मन को चिरकाल तक लगाये रहे। फिर षडक्षरन्यास के द्वारा अपने मन को एकाग्र करके मनुष्य निम्न शिवकवच के द्वारा अपनी रक्षा करे।

मां पातु देवोऽखिलदेवतात्मा

संसारकूपे पतितं गभीरे।

तन्नाम दिव्यं वरमन्त्रमूलं

धुनोतु मे सर्वमद्यं हृदिस्थम्।५।

सर्व देवमय महादेव जी इस गहरे संसार कूप में गिरे हुए मुझ असहाय की आप रक्षा करें। आपका दिव्य नाम जो आपके श्रेष्ठ मंत्र का मूल है मेरे हृदय में स्थित समस्त पापों का नाश करे।

सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्ति-
ज्योतिर्मयानन्दघनश्चिदात्मा।
अणोरणीयानुरुशक्तिरेक:
स ईश्वर: पातु भयादशेषात्।६।

समस्त विश्व जिनकी मूर्ति है, जो ज्योतिर्मय आनन्दघनस्वरूप चिदात्मा हैं, वे भगवान मेरी सर्वत्र रक्षा करें। जो सूक्ष्म से भी अत्यन्त सूक्ष्म हैं, महान् शक्ति से सम्पन्न हैं, वे अद्वितीय 'ईश्वर' महादेवजी समस्त भ.यों से मेरी रक्षा करें।

यो भूस्वरूपेण बिभर्ति विश्वं
पायात् स भूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्ति:।
योऽपां स्वरूपेण नृणां करोति
संजीवनं सोऽवतु मां जलेभ्य:।७।

जिन्होंने पृथ्वी रूप से इस विश्व को धारण कर रखा है, वे अष्टमूर्ति 'गिरिश' पृथ्वी से मेरी रक्षा करें। जो जलरूप से जीवों को जीवन दान दे रहे हैं, वे 'शिव' जल से मेरी रक्षा करें।

कल्पावसाने भुवनानि दग्ध्वा
सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलीलः।
स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्ने-
र्वात्यादिभीतेऽखिलाच्च तापात्।८।

जो विशद लीलाबिहारी 'शिव' कल्प के अंत में समस्त भुवनों को दग्ध करके (आनन्द से) नृत्य करते हैं, वे 'कालरुद्र' भगवान् दावानल से, आंधी-तूफान के भय से और समस्त तापों दु:खों से मेरी रक्षा करें।

प्रदीप्तविद्युत्कनकावभासो विद्यावराभीतिकुठारपाणिः।
चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रः प्राच्यां स्थितं रक्षतु मामजस्त्रम्।९।

प्रदीप्त विद्युत एवं स्वर्ण के सदृश ज़िनकी कान्ति है, विद्या, वर और अभय (मुद्राएं) तथा कुल्हाड़ी जिनके कर-कमलों में सुशोभित है, जो चार मुखों एवं तीन नेत्रों वाले हैं, वे भगवान् 'तत्पुरुष' पूर्व दिशा में निरन्तर मेरी रक्षा करें।

कुठारवेदांकुशपाशशूल-

कपालढक्काक्षगुणान् दधानः।

चतुर्मुखो नीलरुचिस्त्रिनेत्रः

पायादघोरो दिशि दक्षिणस्याम्॥१०॥

जिन्होंने अपने हाथों में कुल्हाड़ी, वेद, अंकुश, फंदा, त्रिशूल, कपाल, डमरू और रुद्राक्ष की माला को धारण कर रखा है तथा जो चतुर्मुख हैं, वे नीलकांति, त्रिनेत्र धारी भगवान् अघोर दक्षिण दिशा में मेरी रक्षा करें।

कुन्देन्दुशंखस्फटिकावभासो

वेदाक्षमालावरदाभयांकः।

त्र्यक्षश्चतुर्वक्त्र उरुप्रभावः

सद्योऽधिजातोऽवतु मां प्रतीच्याम्॥११॥

कुन्द, चन्द्रमा, शंख और स्फटिक के समान जिनकी उज्ज्वल कांति है, वेद, रुद्राक्षमाला, वरद और अभय (मुद्राओं) से जो सुशोभित हैं, वे महाप्रभावशाली चतुरानन एवं त्रिलोचन भगवान् 'सद्योजात' पश्चिम दिशा में मेरी रक्षा करें।

वराक्षमालाभ्यटङ्कहस्तः सरोजकिञ्जल्कसमानवर्णः ।
त्रिलोचनश्चात्रचतुर्मुखो मां पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः॥१२॥

जिनके हाथों में वर एवं अभय (मुद्राएं), रुद्राक्षमाला और टांकी विराजमान हैं तथा कमल-किञ्जल्क के समान जिनका गौर वर्ण है, वे सुन्दर चार मुखवाले त्रिनेत्रधारी भगवान् 'वामदेव' उत्तर दिशा में मेरी रक्षा करें।

वेदाभयेष्टांकुशपाशटङ्क-
कपालढक्काक्षकशूलपाणिः।
सितद्युतिः पञ्चमुखोऽवतान्मा-
मीशान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः॥१३॥

जिनके कर-कमलों में वेद, अभय और वर (मुद्राएं), अंकुश, टांकी, फन्दा, कपाल, डमरू, रुद्राक्षमाला और त्रिशूल सुशोभित हैं, जो अत्यन्त श्वेत आभा से युक्त हैं, वे परम प्रकाश रूप पञ्चमुख भगवान् 'ईशान' मेरी ऊपर से रक्षा करें।

मूर्द्धानमव्यान्मम चन्द्रमौलिर्भालं ममाव्यादथ भालनेत्रः।
नेत्रे ममाव्याद् भगनेत्रहारी नासां सदा रक्षतु विश्वनाथः॥१४॥

भगवान् 'चन्द्रमौलि' मेरे सिरकी, 'भालनेत्र' मेरे ललाट

की, 'भगनेत्रहरी' मेरे नेत्रों की और 'विश्वनाथ' मेरी नासिका की सदैव रक्षा करें।

पायाच्छ्रुती मे श्रुतिगीतकीर्तिः
कपोलमव्यात् सततं कपाली।
वक्त्रं सदा रक्षतु पञ्चवक्त्रो
जिह्वां सदा रक्षतु वेदजिह्वः॥१५॥

'श्रुतिगीतकीर्ति' मेरे कानों की, 'कपाली' निरन्तर मेरे कपोलों की, 'पञ्चमुख' मुख की तथा 'वेदजिह्व' जीभ की रक्षा करें।

कण्ठं गिरिशोऽवतु नीलकण्ठः
पाणिद्वयं पातु पिनाकपाणिः।
दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहु-
र्वक्षःस्थलं दक्षमखान्तकोऽव्यात्॥१६॥

नीलवर्ण के कण्ठ की शोभावाले भगवान् 'गिरिश' मेरे गले की, 'पिनाकपाणि' मेरे दोनों हाथों की, 'धर्मबाहु' दोनों कन्धों की तथा 'दक्षयज्ञविध्वंसी' मेरे वक्षःस्थल की रक्षा करें।

ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा

मध्यं ममाव्यान्मदनान्तकारी।

हेरम्बतातो मम पातु नाभिं

पायात् कटी धूर्जटिरीश्वरो मे॥१७॥

'गिरीन्द्रधन्वा' मेरे पेट की, 'कामदेव के नाशक' भगवान् 'शिव' मेरे मध्य प्रदेश की, 'गणेश जी के पिता' मेरी नाभि की तथा 'धूर्जटिरीश्वर' (सिर पर जटा धारण करने वाले ईश्वर) मेरी कटि की रक्षा करें।

ऊरुद्वयं पातु कुबेरमित्रो

जानुद्वयं मे जगदीश्वरोऽव्यात्।

जङ्घायुगं पुङ्गवकेतुरव्यात्

पादौ ममाव्यात् सुवन्द्यपाद:॥१८॥

'कुबेरमित्र' मेरी दोनों जांघों की, 'जगदीश्वर' दोनों घुटनों की, 'पुङ्गवकेतु' दोनों पिंडलियों की और 'सुखवन्द्यपाद' (जिनके चरणों की देवता वन्दना करते हैं) मेरे पैरों की सदैव रक्षा करें।

महेश्वर: पातु दिनादियामे

मां मध्यमामेऽवतु वामदेव:।

त्रयम्बकः पातु तृतीययामे

वृषभध्वजः पातु दिनान्त्ययामे॥१९॥

'महेश्वर' दिन के पहले पहर में मेरी रक्षा करें, 'वामदेव' मध्य पहर में मेरी रक्षा करें, 'त्र्यम्बक' तीसरे पहर में और 'वृषभध्वज' (वृषचिन्ह है ध्वजा में जिनके ऐसे) दिन के अंतिम पहर में मेरी रक्षा करें।

पायान्निशादौ शशिशेखरो मां गङ्गाधरो रक्षतु मां निशीथे ।
गौरापतिः पातु निशावसाने मृत्युञ्जयो रक्षतु सर्वकालम्॥२०॥

'शशिशेखर' रात्रि के आरम्भ में, 'गंगाधर' अर्धरात्रि में, 'गौरापति' रात्रि के अंत में और 'मृत्युंजय' सर्वकाल में मेरी रक्षा करें।

अन्तःस्थितं रक्षतु शङ्करो मां

स्थाणुः सदा पातु बहिःस्थितं माम्।

तदन्तरे पातु पतिः पशूनां

सदाशिवो रक्षतु मां समन्तात्॥२१॥

'शंकर' घर के भीतर रहने पर मेरी रक्षा करें। 'स्थाणु' बाहर रहने पर मेरी रक्षा करें। 'पशुपति' बीच में मेरी रक्षा करें

और 'सदाशिव' सब ओर से मेरी रक्षा करें।

तिष्ठन्तमव्याद्भुवनैकनाथ: पायाद् व्रजन्तं प्रमथाधिनाथ: ।
वेदांतवेद्योऽवतु मां निषण्णं मामव्यय: पातु शिव: शयानम्॥२२॥

'भुवनैकनाथ' खड़े रहने के समय, 'प्रमथाधिनाथ' चलते समय, 'वेदान्तवेद्य' बैठे रहने के समय और 'अविनाशी शिव' सोते समय मेरी रक्षा करें।

मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठ: शैलादिदुर्गेषु पुरत्रयारि:।
अरण्यवासादिमहाप्रवासे पायान्मृगव्याध उदारशक्ति:॥२३॥

'नीलकण्ठ' गमन-मार्ग पर मेरी रक्षा करें। 'त्रिपुरारि' पहाड़ आदि दुर्गम स्थान पर और उदारशक्ति 'मृगव्याध' वनवासादि महान प्रवासों में मेरी रक्षा करें।

कल्पान्तकाटोपपटुप्रकोप:
स्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोश:।
घोरारिसेनार्णवदुर्निवार-
महाभयाद् रक्षतु वीरभद्र:॥२४॥

जिनका प्रबल क्रोध कल्पों का अन्त करने में अत्यन्त पटु है, जिनके, प्रचण्ड अट्टहास से ब्रह्माण्ड कांप उठता है, वे

'वीरभद्रजी' समुद्र के समान भयानक शत्रुसेना के दुर्निवार महान भय से मेरी रक्षा करें।

पत्त्यश्वमातंगघटावरूथ-
सहस्त्रलक्षायुतकोटिभीषणम्।
अक्षौहिणीनां शतमाततायिनां
क्षिन्द्यान्मृडो घोरकुठारधारया॥२५॥

भगवान 'मृड' मुझ पर आततायी रूप से आक्रमण करने वालों की हजारों, दस हजारों, लाखों और करोड़ों पैदलों, घोड़ों और हाथियों से युक्त अति भीषण सैंकड़ों अक्षौहिणी सेनाओं का अपनी घोर कुठार धार से भेदन करें।

निहन्तु दस्यून् प्रलयानलार्चि-
र्ज्वलत् त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य।
शार्दूसिंहर्क्षवृकादिहिंस्त्रान्
संत्रासयत्वीशधनुः पिनाकम्॥२६॥

भगवान् 'त्रिपुरान्तक' का प्रलयाग्नि के समान ज्वालाओं से युक्त जलता हुआ त्रिशूल (मेरे) दस्युदल का विनाश कर दे और उनका पिनाक धनुष, चीता, सिंह, रीछ, भेड़िया आदि

हिंसक जंतुओं का नाश करें।

दुःखस्वप्नदुश्शकुनदुर्गतिदौर्मनस्य-
दुर्भिक्षदुर्व्यसनदुस्सहदुर्यशांसि।
उत्पाततापविषभीतिमसद्ग्रहार्ति-
व्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः॥२७॥

जगदीश्वर मेरे बुरे स्वप्न, बुरे शकुन, बुरी गति, मन की दुष्ट भावना, दुर्भिक्ष, दुर्व्यसन, दुस्सह अपयश, उत्पात, संताप, विषभय, दुष्ट ग्रहों की पीड़ा तथा समस्त रोगों का नाश करें।

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्त्वात्मकाय सकलतत्वविहाराय सकललोकैककर्त्रे सकललोककैकभर्ते सकललोकैकहर्त्रे सकललोकैकगुरवे सकललोकराक्षिणे सकलनिगमगुह्याय सकलवरप्रदाय सकलदुरितार्त्तिभञ्जनाय सकलजगदभयंकराय सकललोकैकशंकराय शशांकशेखराय शाश्वतनिजाभासाय निर्गुणाय नीरुपमाय नीरूपाय निराभासाय निरामयाय निष्प्रपंचाय निष्कलंकाय निर्द्वन्द्वाय निस्संगाय निर्मलाय निर्गमाय नित्यरूपविभवाय निरुपमविभवाय

निराधाराय नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसच्चिदानन्दाद्वयाय परमशान्तप्रकाश तेजोरूपा जय जय महारुद्र महारौद्र भद्रावतार दुःखदावदारण महाभैरव कालभैरव कल्पान्तभैरव कपालमालाधर खट्वांगखंगचर्मपाशांकुशडमरुशूलचापबाणगदाशक्तिभिन्दिपालतोमरमूसलमुगद्रपट्टिशपरशुपरिघभुशुण्डीशताघ्नीचक्राद्यायुधभीषणकर सहस्त्रमुख दंष्ट्राकराल विकटाट्टहासविसफारितब्रह्माण्डमण्डलनागेन्द्रगुण्डल नागेन्द्रहार नागेन्द्रवलय नागेन्द्रचर्मधर मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विरूपाक्ष विश्वेश्वर वृषभवाहन विषभूषण विश्वतोमुख सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल महामृत्युभयमुत्सादयोत्सादयं नाशय नाशय रोगभयमुत्सादयोत्सादय विषसर्पभयं शमय शमय चोरभयं मारय मारय मम शत्रुनुच्चाटयोच्चाटय शूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि खंगेन छिन्धि छिन्धि खट्वांगेन विपोथय विपोथय मूसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणैः संताडय संताडय रक्षांसि भीषय भीषय भूतानि विद्रावय विद्रावय कूष्मांडवेतालमारीगणब्रह्म राक्षसान् संत्रासय संत्रासय ममाभयं कुरु कुरु वित्रस्तं मामाश्वासयाश्वासय नरक

भयान्मामुद्धारयोद्धारय संजीवय संजीवय क्षुत्तृड्भ्यां ममाप्याययाप्यायय दुःखातुरं मामानन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते।

'ॐ' जिनका वाचक है, सम्पूर्ण तत्त्व जिनके स्वरूप हैं, जो सम्पूर्ण तत्त्वों में विचरण करने वाले, समस्त लोकों के एकमात्र कर्त्ता और समस्त विश्व के एकमात्र भरण-पोषण करने वाले हैं, जो अखिल विश्व के एक ही संहारकारी, सब लोकों के एकमात्र गुरु, समस्त संसार के एकमात्र साक्षी, सम्पूर्ण वेदों के गूढ़ तत्त्व, सबको वर देने वाले, समस्त पापों और पीड़ाओं का नाश करने वाले, सारे संसार को अभय देने वाले, समस्त लोकों के एकमात्र कल्याणकारी, चन्द्रमा का मुकुट धारण करने वाले, अपने सनातन-प्रकाश से प्रकाशित होने वाले, निर्गुण, उपमारहित, निराकार, निराभास, निरामय, निष्प्रपञ्च, निष्कलंक, निर्द्वन्द्व, निस्संग, निर्मल, गति-शून्य, नित्यरूप, नित्य वैभव से सम्पन्न, अनुपम ऐश्वर्य से सुशोभित, आधार शून्य, नित्य-शुद्ध-बुद्ध, परिपूर्ण, सच्चिदानन्दघन, अद्वितीय तथा परमशांत, प्रकाशमय, तेजःस्वरूप हैं, उन भगवान सदाशिव को नमस्कार है। हे महारुद्र, महारौद्र, भद्रावतार, दुःख-दावाग्नि विदारण,

महाभैरव, कालभैरव, कलपान्तभैरव, कपालमालाधारी! हे खटवांग, खंग, ढाल, फन्दा, अंकुश, डमरू, त्रिशूल, धनुष, बाण, गदा, शक्ति, भिन्दिपाल, तोमर, मूसल, मुग्दर, पट्टिश, परशु, परिघ, भुशुण्डी शतघ्नी और चक्र आदि आयुधों के द्वारा भयंकर हाथों वाले! हजार मुख और दंष्ट्रा से कराल, विकट अट्टहास से विशाल ब्रह्माण्डमंडल का विस्तार करने वाले, नागेन्द्र वासुकि को कुण्डल, हार, कंकण तथा ढाल के रूप में धारण करने वाले, मृत्युञ्जय, त्रिनेत्र, त्रिपुरनाशक, भयंकर नेत्रों वाले, विश्वेश्वर, विश्वरूप में प्रकट, बैल पर सवारी करने वाले, विष को गले में भूषण रूप में धारण करने वाले तथा सब ओर मुख वाले भगवान् शंकर! आपकी जय हो, जय हो! आप मेरी सब ओर से रक्षा कीजिये। प्रज्ज्वलित होइये प्रज्ज्वलित होइये। मेरे महामृत्युञ्जय भय का तथा अपमृत्यु के भय का नाश कीजिये, नाश कीजिये। बाहर और भीतरी रोग-भय को जड़ से मिटा दीजिये, जड़ से मिटा दीजिये। विष और सर्प के भय को शान्त कीजिये, शान्त कीजिये। चोरभय को मार डालिये, मार डालिये। मेरे (काम, क्रोध, लोभादि भीतरी तथा इन्द्रियों के और शरीर के द्वारा होने वाले पापकर्मरूपी बाहरी) शत्रुओं का उच्चाटन

कीजिये, उच्चाटन कीजिये। त्रिशूल के द्वारा विदारण कीजिये, विदारण कीजिये। कुठार के द्वारा काट डालिये, काट डालिये। खड्ग के द्वारा छेद डालिए, छेद डालिए। खटवाङ्ग के द्वारा नाश कीजिये, नाश कीजिये। मूसल के द्वारा पीस डालिये, पीस डालिये और बाणों के द्वारा बींध डालिए, बींध डालिए। (आप मेरी हिंसा करने वाले) राक्षसों को भय दिखाइये, भय दिखाइये। भूतों को भगा दीजिये, भगा दीजिये। कूष्माण्ड, वेताल, मारियों और ब्रह्मराक्षसों को संत्रस्त कीजिये, संत्रस्त कीजिये। मुझ को अभय दीजिये, अभय दीजिये। मुझे अत्यन्त डरे हुए को आश्वासन दीजिए, आश्वासन दीजिए। नरक भय से मेरा उद्धार कीजिए, उद्धार कीजिए। मुझे जीवनदान दीजिए, जीवनदान दीजिए। क्षुधा-तृष्णा का निवारण करके मुझको आप्यायित कीजिए, आप्यायित कीजिए। आपकी जय हो, जय हो। मुझ दुःखातुर को आनन्दित कीजिए, आनन्दित कीजिए। शिव कवच से मुझे आच्छादित कीजिए, आच्छादित कीजिए। त्रयम्बक सदाशिव आपको नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है।

ऋषभ उवाच:

इत्येतत्कवचं शैवं वरदं व्याहृतं मया।

सर्वबाधाप्रशमनं रहस्यं सर्वदेहिनाम्॥२८॥

ऋषभ जी कहते हैं- इस प्रकार यह वरदायक शिव कवच मैंने कहा है। यह समस्त बाधाओं को शान्त करने वाला तथा समस्त देहधारियों के लिए गोपनीय रहस्य है।

यः सदा धारयेन्मर्त्यः शैवः कवचमुत्तमम्।
न तस्य जायते क्वापि भयं शंभोरनुग्रहात्॥२९॥

जो मनुष्य इस उत्तम शिव कवच को सदा धारण करता है, उसे भगवान शिव के अनुग्रह से कभी भी और कहीं भी भय नहीं होता।

क्षीणायुर्मृत्युमापन्नौ महारोगहतोऽपि वा।
सद्यः सुखमप्राप्नोति दीर्घमायुश्च विन्दति॥३०॥

जिसकी आयु क्षीण हो चली है, जो मरणासन्न हो गया है अथवा जिसे महान रोगों ने मृतक-सा कर दिया है, वह भी इस कवच के प्रभाव से तत्काल सुखी हो जाता है और दीर्घायु प्राप्त कर लेता है।

सर्वदारिद्र्यशमनं सौमङ्गल्यविवर्धनम्।
यो धत्ते कवचं शैवं स देवैरपि पूज्यते॥३१॥

शिव कवच समस्त दरिद्रता का शमन करने वाला और सौमांगल्य को बढ़ाने वाला है, जो इसे धारण करता है, वह देवताओं से भी पूजित होता है।

महापातकसंघातैर्मुच्यते चोपपातकैः।
देहान्ते शिवंप्राप्नोति शिववर्मानुभावतः॥३२॥

इस शिव कवच के प्रभाव से मनुष्य महापातकों के समूहों और उपपातकों से भी छुटकारा पा जाता है तथा शरीर का अन्त होने पर शिव को पा लेता है।

त्वमपि श्रद्धया वत्स शैवं कवचमुत्तमम्।
धारयस्व मया दत्तं सद्यः श्रेयो ह्यवात्स्यसि॥३३॥

वत्स! तुम भी मेरे दिए हुए इस उत्तम शिवकवच को श्रद्धापूर्वक धारण करो, इससे तुम शीघ्र और निश्चय ही कल्याण के भागी होओगे।

॥ इति श्रीस्कन्दमहापुराणे एकाशीतिसहस्त्रयां तृतीये
ब्रह्मोत्तरखण्डे वर्जित अमोघशिवकवचं
सम्पूर्णम॥



आरती श्री शिवजी की

ॐ जय शिव ओंकारा हर शिव ओंकारा
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा॥ ॐ जय....!!
एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसानन गरुडासन वृषवाहन साजे॥ ॐ जय....!!
दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज ते सोहे।
तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहे॥ ॐ जय....!!
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे॥ ॐ जय....!!
अक्षमाला, वनमाला, मुण्डमाला धारी।
चंदन मृगमद चन्दा, भोले शुभकारी॥ ॐ जय....!!
कर के मध्ये कंमडल, चक्र त्रिशूल धर्ता।
जग करता जग हर्ता जग पालन करता॥ ॐ जय....!!
लक्ष्मी वर सावित्री श्री पार्वती संगे।
अर्द्धांगी गायत्री सिर सोहे गंगे॥ ॐ जय....!!
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये, ये तीनों एका॥ ॐ जय....!!
त्रिगुण स्वामी जी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत् शिवानंद स्वामी, मनवांछित फल पावे॥ ॐ जय...!!
ॐ जय शिव ओंकारा, हरि ॐ जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा॥ ॐ जय....!!




ॐ

श्रीनारायण कवचम्

सबसे पहले भगवान् श्रीगणेश जी तथा भगवान् नारायण को नमस्कार करके निम्न प्रकार से न्यास करें-

अंगन्यासः

ॐ ॐ नमः – पादयोः।

दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली-अंगूठा दोनों को मिलाकर दोनों पैरों का स्पर्श करें।

ॐ नं नमः – जानुनोः।

दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली-अंगूठा दोनों को मिलाकर दोनों घुटनों का स्पर्श करें।

ॐ मों नमः ऊर्वोः।

दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली-अंगूठा दोनों को मिलाकर दोनों जांघों का स्पर्श करें।

ॐ नां नमः – उदरे।

दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली-अंगूठा दोनों को मिलाकर पेट का स्पर्श करें।

ॐ रां नमः – हृदि।

दाहिने हाथ की मध्यमा-तर्जनी-अनामिका से हृदय का स्पर्श करें।

ॐ यं नमः उरसि।

दाहिने हाथ की मध्यमा-अनामिका-तर्जनी से छाती का स्पर्श करें।

ॐ णां नमः – मुखे।

दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली-अंगूठे को मिलाकर मुख का स्पर्श करें।

ॐ यं नमः – शिरसि।

दाहिने हाथ की तर्जनी-मध्यमा को मिलाकर सिर का स्पर्श करें।

करन्यास:

ॐ ॐ नमः – दक्षिणतर्जन्याम्।

दाहिने अंगूठे से दाहिनी तर्जनी के सिरे का स्पर्श करें।

ॐ नं नमः दक्षिणमध्यमायाम्।

दाहिने अंगूठे से दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें।

ॐ मों नमः – दक्षिणानामिकायाम्।

दाहिने अंगूठे से दाहिने हाथ की अनामिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें।

ॐ भं नमः – दक्षिणकनिष्ठिकायाम्।

दाहिने अंगूठे से दाहिने हाथ की कनिष्ठिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें।

ॐ गं नमः – वामकनिष्ठिकायाम्।

बाएं अंगूठे से बाएं हाथ की कनिष्ठिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें।

ॐ वं नमः - वामानामिकायाम्।

बाएं अंगूठे से बाएं हाथ की अनामिका का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें ।

ॐ तें नमः – वाममध्यमायाम्।

बाएं अंगूठे से बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें।

ॐ वां नमः – वामतर्जन्याम्।

बाएं अंगूठे से बाएं हाथ की तर्जनी अंगुली का ऊपर वाला पोर स्पर्श करें।

ॐ सुं नमः – दक्षिणांगुष्ठःअधःपर्वणि।

दाहिने हाथ की चारों अंगुलियों से दाहिने हाथ के अंगूठे का नीचे वाला पोर स्पर्श करें।

ॐ वां नमः – वामांगुष्ठोर्ध्वपर्वणि।

बाएं हाथ की चारों अंगुलियों से बाएं हाथ के अंगूठे के ऊपर वाला पोर स्पर्श करें।

ॐ यं नमः – वामांगुष्ठः अद्यः पर्वणि।

बाएं हाथ की चारों अंगुलियों से बाएं हाथ के अंगूठे का नीचे वाला पोर स्पर्श करें।

विष्णुषडक्षरन्यासः

ॐ ॐ नमः – हृदये।

दाएं हाथ की तर्जनी-मध्यमा और अनामिका से हृदय का स्पर्श करें।

ॐ विं नमः – मूर्धनि।

दाएं हाथ की तर्जनी-मध्यमा को मिलाकर सिर का स्पर्श करें।

ॐ षं नमः – भ्रुवोर्मध्ये।

दाएं हाथ की तर्जनी-मध्यमा से दोनों भौंहों का

स्पर्श करें।

ॐ णं नमः – शिखायाम्।

दाएं अंगूठे से शिखा का स्पर्श करें।

ॐ वें नमः – नेत्रंयोः।

दाएं हाथ की तर्जनी-मध्यमा से दोनों नेत्रों को स्पर्श करें।

ॐ नं नमः सर्वसंधिषु।

दाएं हाथ की तर्जनी-मध्यमा और अनामिका से शरीर के सभी जोड़ों-कंधा, कोहनी, घुटना आदि का स्पर्श करें।

ॐ मः अस्त्राय फट् – प्राच्याम्।

पूर्व की ओर चुटकी बजाएं।

ॐ मः अस्त्राय फट् – आग्नेय्याम्।

अग्निकोण में चुटकी बजाएं।

ॐ मः अस्त्राय फट् – दक्षिणस्याम्।

दक्षिण की ओर चुटकी बजाएं।

ॐ मः अस्त्राय फट् – नैर्ऋत्ये।

नैर्ऋत्यकोण में चुटकी बजाएं।

ॐ मः अस्त्राय फट् – प्रतीच्याम्।

पश्चिम की ओर चुटकी बजाएं।

ॐ मः अस्त्राय फट् – वायव्ये।

वायुकोण में चुटकी बजाएं।

ॐ मः अस्त्राय फट् – उदीच्याम्।

उत्तर की ओर चुटकी बजाएं।

ॐ मः अस्त्राय फट् – ऐशान्याम्।

ईशानकोण में चुटकी बजाएं।

ॐ मः अस्त्राय फट् – ऊर्ध्वायाम्।

ऊपर की ओर चुटकी बजाएं।

ॐ मः अस्त्राय फट् – अधरायाम्।

नीचे की ओर चुटकी बजाएं।



श्रीहरिः

श्रीनारायण कवचम्

राजोवाचः

यया गुप्तः सहस्त्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान्।
क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रयम्॥१॥
भगवंस्तन्ममाख्याहि धर्म नारायणात्मकम्।
यथाऽऽततायिनः शत्रून येन गुप्तोऽजयन्मृधे॥२॥

राजा परीक्षित ने पूछा-हे भगवान्! देवराज इन्द्र ने जिस कवच से सुरक्षित होकर शत्रुओं की चतुरंगिनी सेना को खेल-खेल में ही पराजित करके त्रिलोकी की राजलक्ष्मी का उपयोग किया, आप उस नारायण कवच को मुझे सुनाइये और यह भी बतायें कि उन्हांने उससे किस प्रकार सुरक्षित होकर युद्धभूमि में आक्रमणकारी शत्रुओं पर विजय प्राप्त की॥१-२॥

वृतः पुरोहितस्त्वाष्ट्रो महेन्द्रायानुपृच्छते।
नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृणु॥३॥

श्रीशुकदेव जी ने कहा-हे परीक्षित्! जब सभी देवताओं ने विश्वरूप को पुरोहित बना लिया, तब देवराज इन्द्र के पूछने

पर विश्वरूप ने उन्हें दिव्यनारायण कवच का उपदेश किया। तुम एकाग्रचित्त होकर उसका श्रवण करो।।३।।

विश्वरूप उवाच:

धौताङ्घ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ्मुखः।
कृतस्वांगकरन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः।।४।।
नारायणमयं वर्म संनह्येद् भय आगते।
पादयोर्जानुनोरूर्वोरुदरे हृद्यथोरसि।।५।।
मुखे शिरस्यानुपूर्व्यादोंकारादीनि विन्यसेत्।
ॐ नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा।।६।।

विश्वरूप ने कहा- हे देवराज इन्द्र! भय का अवसर उपस्थित होने पर नारायण कवच धारण करके सर्वप्रथम अपने शरीर की रक्षा कर लेनी चाहिए। सबसे पहले स्वच्छ जल से हाथ-पैर धोकर आचमन करे फिर हाथ में कुशा की पवित्री धारण करके उत्तर की ओर मुंह करके बैठ जाये। इसके बाद कवच धारण करने तक, कुछ न बोलने का निश्चय करके श्रद्धापूर्वक-'ॐ नमो नारायणाय' और 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः'- इन मंत्रों से हृदयादि,

अंगन्यास तथा अंगुष्ठादि करन्यास करें। पहले 'ॐ नमो नारायणाय' इस अष्टाक्षर मंत्र से 'ॐ' आदि आठ अक्षरों का क्रमश: पैरों, घुटनों, जांघों, पेट, हृदय, वक्ष:स्थल, मुख और सिर में न्यास करे अथवा पूर्वोक्त मंत्र के यकार से लेकर 'ॐकार' पर्यन्त आठ अक्षरों को सिर से आरंभ करके उन्हीं आठ अंगों में विपरीत क्रम से न्यास करें।।४-५-६।।

करन्यासं ततः कुर्याद् द्वादशाक्षरविद्यया।
प्रणवादियकारान्तमंगुल्यंगुष्ठपर्वसु ।।७।।

इसके बाद 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नम:' इस मंत्र के 'ॐ' आदि बारह अक्षरों का दायीं तर्जनी से बायीं तर्जनी तक दोनों हाथ की आठ अंगुलियों और दोनों अंगूठों की दो-दो गांठों में न्यास करें।।७।।

न्यसेद्धृदय ओंकारं विकारमनु मूर्धनि।
षकारं तु भ्रुवोर्मध्येणकारं शिखया दिशेत्।।८।।
वेकारं नेत्रयोर्युञ्जयान्नकारं सर्वसंधिषु।

मकारमस्त्रमुद्दिश्य मन्त्रमूर्तिर्भयेद् बुधः॥९॥
सविसर्गं फडन्तं तत् सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत्।
ॐ विष्णवे नमः इति॥१०॥

फिर 'ॐ विष्णवे नमः' इस मंत्र के पहले अक्षर 'ॐ' का हृदय में, 'वि' का ब्रह्मरन्ध्र में, 'ष' का भौंहों के बीच में, 'ण' का चोटी में, 'वे' का दोनों नेत्रों में और 'न' का शरीर की सब गांठों में न्यास करें। इसके पश्चात् 'ॐ मः अस्त्राय फट्' कहकर दिग्बन्ध करें। इस प्रकार न्यास करने से इस विधि को जानने वाला पुरुष मंत्रस्वरूप हो जाता है॥८-९-१०॥

आत्मानं परमं ध्यायेद् ध्येयं षट्शक्तिभिर्युतम्।
विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत्॥११॥

इसके बाद समग्र ऐश्वर्य, धर्म, यश, लक्ष्मी, ज्ञान और वैराग्य से परिपूर्ण इष्टदेव भगवान् का ध्यान करें और अपने को भी इसी रूप में मानकर ही चिन्तन करें। इसके पश्चात विद्या, तेज और तपःस्वरूप इस कवच का पाठ आरंभ करें॥११॥

ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां
न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे।
दरारिचर्मासिगदेषुचाप-
पाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः॥१२॥

भगवान् श्रीहरि गरुड़जी की पीठ पर अपने श्री चरण-कमल रखे हुए हैं। अणिमादि आठों सिद्धियां उनकी सेवा कर रही हैं। आठ हाथों में शंख, चक्र, ढाल, तलवार, गदा, बाण, धनुष और पाश (फंदा) धारण किये हुए हैं। वे ही 'ॐकार स्वरूप' प्रभु सब प्रकार से तथा सब ओर से मेरी रक्षा करें।॥१२॥

जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्तिर्या-
दोर्गणेभ्यो वरुणस्य पाशात्।
स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात्
त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः॥१३॥

'मत्स्यमूर्ति' भगवान जल के अन्दर जीव-जन्तुओं से और वरुण के पाश से मेरी रक्षा करें। माया से ब्रह्मचारी का रूप धारण करने वाले 'वामन' भगवान् स्थल पर और

विश्वरूप 'श्री त्रिविक्रम' भगवान् आकाश में मेरी रक्षा करें॥१३॥

दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः
पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः।
विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं
दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः॥१४॥

जिनके प्रचण्ड अट्टहास करने पर सब दिशाएं गूंज उठी थीं और गर्भवती दैत्य-पत्नियों के गर्भ गिर गए थे, वे दैत्य यूथपतियों के परम् शत्रु भगवान् 'नृसिंह' किले, जंगल, युद्धभूमि आदि दुर्गम स्थानों में मेरी रक्षा करें॥१४॥

रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः
स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः।
रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे
सलक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान्॥१५॥

अपनी दाढ़ों से पृथ्वी को उठा लेने वाले यज्ञमूर्ति 'वराह' भगवान् मार्ग में, 'परशुराम जी' पर्वतों के शिखरों

र और लक्ष्मण जी के सहित भरत के बड़े भाई भगवान् 'रामचन्द्र जी' प्रवास के समय मेरी रक्षा करें।।१५।।

मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादा-
न्नारायण: पातु नरश्च हासात्।
दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथ:
पायाद् गुणेश: कपिल: कर्मबन्धनात्।।१६।।

भगवान 'नारायण' मारण-मोहन आदि भयंकर अभिचारों एवं तांत्रिक क्रियाओं और सब प्रकार के प्रमादों से मेरी रक्षा करें। 'ऋषि श्रेष्ठ' नरक से, योगेश्वर भगवान 'दत्तात्रेय' योग के विघ्नों से और त्रिगुणाधिपति भगवान् 'कपिल' कर्मबन्धनों से मेरी रक्षा करें।।१६।।

सनत्कुमारोऽवतु कामदेवा-
द्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात्।
देवर्षिवर्य: पुरुषार्चनान्तरात्
कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात्।।१७।।

परमर्षि सनतकुमार कामदेव से, हयग्रीव भगवान मार्ग में चलते समय देव-मूर्तियों को नमस्कार आदि न

करने के अपराध से, देवर्षि नारद सेवापराधों से और भगवान कच्छप सब प्रकार के नरकों से मेरी रक्षा करें।।१७।।

धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद्
द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा।
यज्ञश्च लोकादेवताज्जानान्ताद्
बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः।।१८।।

भगवान धन्वन्तरि कुपथ्य से, जितेन्द्रिय भगवान ऋषभदेव सुख-दुःख आदि भंयकर द्वन्द्वों से, यज्ञ भगवान लोकोपवाद से, बलराम जी मनुष्यकृत कष्टों से और शेषनाग जी के क्रोधवश-नामक सर्पों के गण से मेरी रक्षा करें।।१८।।

द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद् बुद्धस्तु
पाखण्डगणात् प्रमादात्।
कल्कि: कले: कालमलात्
प्रपातु धर्मावनायोरुकृतावतार:।।१९।।

भगवान श्री कृष्ण द्वैपायन व्यास जी अज्ञान से तथा बुद्धदेव पाखण्डियों से और झूठ बोलने वालों से मेरी रक्षा करें। धर्म-रक्षा के लिए महान अवतार धारण करने वाले

भगवान कल्कि पापबहुल कलिकाल के दोषों से मेरी रक्षा करें।।१९।।

मां केशवो गदया प्रातरव्याद्
गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणुः।
नारायणः प्राह्ण उदात्तशक्ति-
र्मध्यंदिने विष्णुररीन्द्रपाणिः।।२०।।

प्रातःकाल भगवान केशव अपनी गदा लेकर, थोड़ा-सा दिन चढ़ जाने पर भगवान गोविन्द अपनी बांसुरी लेकर, दोपहर के पहले भगवान नारायण अपनी तीक्ष्ण शक्ति लेकर और दोपहर को भगवान विष्णु चक्रराज सुदर्शन लेकर मेरी रक्षा करें।।२०।।

देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा सायं
त्रिधामावतु माधवो माम्।
दोषी हृषीकेश उतार्धरात्रे
निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः।।२१।।

तीसरे पहर में भगवान मधुसूदन अपना प्रचण्ड धनुष लेकर मेरी रक्षा करें। सांयकाल में ब्रह्मा आदि त्रिमूर्ति धारी

माधव, सूर्यास्त के बाद हृषीकेश, अर्धरात्रि के पूर्व तथा अर्धरात्रि के समय अकेले भगवान पद्मनाभ मेरी रक्षा करें।।२१।।

श्रीवत्सधामापररात्र ईशः
प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः।
दामोदरोऽव्यादनुसंध्यं प्रभाते
विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः।।२२।।

रात्रि के पिछले पहर में श्रीवत्सलाञ्छल श्रीहरि, उषाकाल में खड्गधारी भगवान जनार्दन, सूर्योदय से पूर्व श्रीदामोदरं और सम्पूर्ण संध्याओं में कालमूर्ति भगवान विश्वेश्वर मेरी रक्षा करें।।२२।।

चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि
भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम्।
दंदग्धि दंदग्ध्यरिसैन्यमाशु
कक्षं यथा वातसखो हुताशः।।२३।।

हे सुदर्शन! आपका चक्र (रथ के पहिये) की तरह है। आपके किनारे का भाग प्रलयकालीन अग्नि के समान

अत्यन्त तीव्र है। आप भगवान की प्रेरणा पाकर सब ओर घूमते रहते हैं। जैसे अग्नि वायु की सहायता पाकर सूखे घास-फूस को जला डालती है, वैसे ही आप हमारी शत्रु सेना को अतिशीघ्र जला दीजिये, जला दीजिये।।२३।।

गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिंगे
निष्पिण्ढि निष्पिण्ढ्यजितप्रियासि।
कूष्माण्डवैनायकयक्षरक्षो-
भूतग्रहांश्चूर्णय चूर्णयारीन्।।२४।।

कौमेद की गदा! आपसे निकलने वाली चिंगारियों का स्पर्श वज्र के समान असह्य है। आप भगवान अजित की प्रिया हैं और मैं उनका सेवक (दास) हूं। इसलिए आप कूष्माण्ड, विनायक, यक्ष, राक्षस, भूत और प्रेतादि ग्रहों को अभी पीस डालिये, पीस डालिये तथा मेरे शत्रुओं को चूर-चूर कर दीजिये।।२४।।

त्वं यातुधानप्रमथप्रेतमातृ-
पिशाचविप्रग्रहघोरदृष्टीन्।

दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो
भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन्॥२५॥

शंखश्रेष्ठ! आप भगवान श्री कृष्ण के फूंकने से भयंकर शब्द करके मेरे शत्रुओं का दिल दहला दीजिये एवं यातुधान, प्रमथ, प्रेत, मातृका, पिशाच तथा ब्रह्मराक्षस आदि भयानक प्राणियों को यहां मेरी नजरों से दूर कर दीजिए॥२५॥

त्वं तिंग्मधारासिवरारिसैन्य-
मीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि।
चक्षूँषि चर्मञ्छतचन्द्र छादय
द्विषामघोनां हर पापचक्षुषाम्॥२६॥

भगवान की श्रेष्ठ तलवार! आपकी धार अत्यन्त तीक्ष्ण है। आप भगवान की प्रेरणा पाकर मेरे शत्रुओं को छिन्न-भिन्न कर दीजिये। भगवान की प्यारी ढाल! आप में सैंकड़ों चन्द्राकार मण्डल हैं। आप पाप दृष्टि पापात्मा शत्रुओं की आंखों की रोशनी छीनकर उन्हें सदा के लिए अन्धा बना दीजिए॥२६॥

यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽभूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च।
सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योंऽहोभ्य एव वा॥२७॥
सर्वाण्येतानि भगवान्नामरूपास्त्रकीर्तनात्।
प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः॥२८॥

सूर्य आदि ग्रह, धूमकेतु (पुच्छल तारे) आदि, केतु, दुष्ट मनुष्य, सर्पादि रेंगने वाले जन्तु, दाढ़ों वाले हिंसक पशु, भूत-प्रेत आदि तथा पापी प्राणियों से हमें जो-जो भय हो और जो-जो हमारे मंगल में बाधक हों-वे सभी भगवान के नाम, रूप तथा आयुधों (शस्त्रों) का कीर्तन करने के प्रताप से तत्काल नष्ट हो जाएं॥२७-२८॥

गरुडो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः।
रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विषवक्सेनः स्वनामभिः॥२९॥

बाहद, रथन्तर आदि सामवेदीय स्तोत्रों से जिनकी स्तुति की जाती है, वे वेदमूर्ति भगवान गरुड़ और विषवक्सेनजी अपने नामोच्चारण के प्रभाव से सब प्रकार की विपत्तियों और कष्टों से हमारी रक्षा करें॥२-९॥

सर्वापद्भ्यो हरेर्नामरूपयानायुधानि नः।
बुद्धीन्द्रियमनः प्राणान् पान्तु पार्षदभूषणाः॥३०॥

श्रीहरि के नाम, रूप, वाहन, आयुध (शस्त्र) और श्रेष्ठ पार्षद हमारी बुद्धि, इन्द्रिय, मन और प्राणों को सब कार की विपत्तियों और कष्टों से बचाएं॥३०॥

यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत्।
सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः॥३१॥

जितना भी कार्य अथवा कारण रूप जगत है, वह वास्तव में भगवान ही हैं-इस सत्य के प्रभाव से हमारे सारे उपद्रव शीघ्र नष्ट हो जाएं॥३१॥

यथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम्।
भूषणायुधलिंगाख्या धत्ते शक्तिः स्वमायमा॥३२॥
तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः।
पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः॥३३॥

जो व्यक्ति ब्रह्म और आत्मा की एकता का अनुभव ... नुके हैं, उनकी दृष्टि में भगवान का स्वरूप समस्त

विकल्पों-भेदों से रहित हैं, फिर भी वे अपनी माया-शक्ति के द्वारा भूषण, आयुध और रूप नामक शक्तियों को धारण करते हैं। यह बात वास्तविक रूप से सत्य है। इस कारण सर्वज्ञ, सर्वव्यापक भगवान श्रीहरि सदा-सर्वत्र सब स्वरूपों से हमारी सब ओर से रक्षा करें।।३२-३३।।

विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्तादन्त-
बहिर्भगवान् नारसिंहः।
प्रहापयंल्लोकभयं स्वनेन
स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः।।३४।।

जो अपने प्रचण्ड अट्टहास से सब लोकों के भय को भगा देते हैं और अपने तेज से सबका तेज ग्रस लेते हैं, वे भगवान नृसिंह दिशा-विदिशा में, ऊपर-नीचे, बाहर-भीतर सब ओर से हमारी रक्षा करें।।३४।।

मघवन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम्।
विजेष्यस्यञ्जसा येन दंशितोऽसुरयूथपान्।।३५।।

हे देवराज इन्द्र! मैंने तुम्हें यह नारायण कवच सुना

दिया। इस कवच से तुम अपने को सुरक्षित कर लो। फिर तुम अनायास ही सब दैत्य-यूथपतियों को जीत लोगे।।३५।।

एतद् धारयमाणस्तु यं यं पश्यति चक्षुषा।
पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते।।३६।।

इस नारायण कवच को धारण करने वाला पुरुष जिसको अपने नेत्रों से देख लेता है अथवा पैर से छू देता है, वह उसी क्षण सभी भयों से मुक्त हो जाता है।।३६।।

न कुतश्चिद् भयं तस्य
विद्यां धारयतो भवेत्।
राजदस्युग्रहादिभ्यो व्याघ्रा-
दिभ्यश्च कर्हिचित्।।३७।।

जो इस वैष्णवी विद्या को धारण कर लेता है, उसे राजा, दस्यु (डाकू), प्रेत-पिशाचादि और बाघ (शेर) आदि हिंसक जीवों से कभी किसी प्रकार का कोई भय नहीं होता।३७।।

इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन् द्विजः।
योगधारणया स्वांग जहौ स मरुधन्वनि।।३८।।

हे देवराज! प्राचीनकाल की बात है, एक कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण ने इस विद्या को धारण करके योगधारणा से अपना शरीर मरुभूमि में त्याग दिया।।३८।।

तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा।
ययौ चित्ररथः स्त्रीभिर्वृतो यत्र द्विजक्षयः।।३९।।

जहां उस ब्राह्मण का शरीर पड़ा था, उसके ऊपर से एक दिन गंधर्वराज चित्ररथ अपनी पत्नियों के साथ विमान में बैठकर निकले।।३-९।।

गगनान्यपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाक्शिराः।
स बालखिल्यवचनादस्थीन्यादाय विस्मितः।
प्रास्य प्राचीसरस्वत्यां स्नात्वा।
धाम स्वमन्वगात् ।।४०।।

वहां आते ही वे सभी नीचे की ओर विमान सहित आकाश से पृथ्वी पर गिर पड़े। इस घटना से वह सभी आश्चर्यचकित हो गये। जब उन्हें बालखिल्य मुनियों ने बताया कि यह नारायण कवच धारण करने का प्रभाव है, तब उन्होंने उस ब्राह्मण देवता की हड्डियों को ले जाकर प्राचीन सरस्वती नदी में प्रवाहित कर दिया और फिर स्नान

करके वे सभी अपने लोक वापस आ गए।।४०।।

श्री शुक उवाचः

य इदं शृणुयात् काले यो धारयति चादृतः।
तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्यते सर्वतो भयात्।।४१।।

श्री शुकदेवजी कहते हैं- हे परीक्षित! जो पुरुष इस नारायण कवच को समय पर सुनता है और जो श्रद्धाभक्ति पूर्वक इसे धारण करता है, उसके सामने सभी प्राणी आदर से झुक जाते हैं और वह सब प्रकार के भयों से मुक्त हो जाता है।।४१।।

एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः।
त्रैलोक्यलक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्य मृधेऽसुरान्।।४२।।

हे परीक्षित! शतक्रतु इन्द्र ने आचार्य विश्वरूप जी से यह वैष्णवी विद्या प्राप्त करके युद्धभूमि में असुरों को पराजित कर दिया और वे त्रैलोक्य लक्ष्मी का उपभोग करने लगे।।४२।।



आरती नारायण जी की

ऊँ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे।। ऊँ।।
जो ध्यावे फल पावे दुख विनसे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का।। ऊँ।।
मात - पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करूँ जिसकी।। ऊँ।।
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी।। ऊँ।।
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्ता।। ऊँ।।
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमती।। ऊँ।।
दीन बन्धु दुख हर्ता तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ शरण पड़ा तेरे।। ऊँ।।
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा।। ऊँ।।
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा 'प्रभु'।
तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा।। ऊँ ।।



३. श्री गोपाल अक्षय कवचम्

॥ श्री नारद उवाच: ॥

इन्द्राद्यमरवर्गेषु ब्रह्मन् यत्परमाद्भुतम्,
अक्षयं कवचं नाम कथयस्व मम प्रभो॥१॥

श्री नारद ने कहा! इन्द्रादि अमर वर्ग से भी अद्भुत अक्षय नामक कवच को हे ब्रह्माजी! हे प्रभु! मुझे बताइये।

यद्धृत्वाऽऽकर्ण्य वीरस्तु त्रैलोक्यविजयो भवेत्॥१॥

जो धारण करने से वीरता प्रदान करता है और त्रिलोक पर भी विजय दिलाता है।

॥ ब्रह्मोवाचः ॥

शृणु पुत्र मुनिश्रेष्ठ कवचं परमाद्‌भुतम्।
इन्द्रादिदेववृन्दैश्च नारायणमुखाच्छ्रुतम्॥२॥

ब्रह्माजी ने कहा! मुनियों में श्रेष्ठ हे पुत्र! परम अद्‌भुत कवच सुनो। इसे इन्द्रादि देवताओं ने नारायण के मुख से सुना था।

त्रैलोक्यविजयस्यास्य कवचस्य प्रजापतिः।
ऋषिश्छन्दो देवता च सदा नारायणः प्रभु॥३॥

इस त्रैलोक्य विजय दिलाने वाले कवच के प्रजापति ऋषि हैं, अनुष्टुप छन्द हैं एवं श्री नारायण प्रभु इसके देवता हैं।

॥ विनियोगः ॥

ॐ अस्य श्री त्रैलोक्य विजयाक्षय कवचस्य, प्रजापति ऋषिः। श्री नारायणः परमात्मा देवता। धर्मार्थ काम मोक्षार्थे जपे विनियोगः॥४॥

पादौ रक्षतु गोविन्दो जङ्घे पातु जगत्प्रभु।

उरु द्वौ केशवः पातु कटी दामोदरस्ततः।।५।।

गोविन्द पैरों की रक्षा करें। जगत प्रभु जांघों की रक्षा करें। दोनों उरुवों की रक्षा केशव करें। कमर की रक्षा दामोदर करें।

वदनं श्री हरिः पातु नाड़ी देशं च मेऽच्युतः,
वामपार्श्व तथा विष्णुर्दक्षिणं च सुदर्शनः।।६।।

(चेहरे) मुख की रक्षा श्री हरि करें। नाड़ी-संस्थान की अच्युता रक्षा करें। बायीं ओर की विष्णु तथा दायीं ओर की सुदर्शन रक्षा करें।

बाहुमूले वासुदेवो हृदयं च जनार्दनः,
कंठं पातु वराहश्च कृष्णश्च मुखमण्डलम्।।७।।

कन्धों की रक्षा वासुदेव करें। हृदय की रक्षा जनार्दन करें। कण्ठ की रक्षा वाराह करें। मुखमण्डल की रक्षा श्री कृष्ण करें।

कर्णौ मे माधवः पातु हृषीकेशश्च नासिके,
नेत्रे नारायणः पातु ललाटं गरुड़ध्वजः।।८।।

कानों की रक्षा माधव करें। नासिका की रक्षा हृषीकेश करें। नेत्रों की रक्षा नारायण करें। ललाट की रक्षा गरुड़ध्वज करें।

कपोलं केशवः पातु चक्रपाणिः शिरस्तथा,
प्रभाते माधवः पातु मध्याह्ने मधुसूदनः॥९॥

कपोलों की रक्षा केशव करें। सिर की रक्षा चक्रपाणि करें। प्रभात में माधव रक्षा करें। मध्याह्न में मधुसूदन रक्षा करें।

दिनान्ते दत्यनाशश्च रात्रौ रक्षतु चन्द्रमा,
पूर्वस्यां पुण्डरीकाक्षो वायव्यां च जनार्दनः॥१०॥

दिन के अन्त में दैत्यों का नाश करने वाले रक्षा करें। रात में चन्द्रमा रक्षा करें। पूर्व दिशा में पुण्डरीकाक्ष रक्षा करें। वायव्य में जनार्दन रक्षा करें।

॥इति श्री गोपालाक्षय कवचम् हिन्दी भाषा टीका समाप्तम्॥



श्री गोपाल जी की आरती

आरती युगल किशोर की कीजै, राधे धन न्यौछावर कीजै।
रवि शशि कोटि बदन की शोभा, ताहि निरखि मेरा मन लोभा।
गौर श्याम मुख निरखत रीझै, प्रभु को रूप नयन भर पीजै।
कञ्चन थार कपूर की बाती, हरि आए निर्मल भई छाती।
फूलन की सेज फूलन की माला, रत्न सिंहासन बैठे नन्दलाला।
मोर मुकुट कर मुरली सोहे, नटवर वेष देख मन मोहे।
ओढ़े नील पीत पट सारी, कुञ्ज बिहारी गिरिवर धारी।
श्री पुरुषोत्तम गिरिवर धारी, आरती करत सकल ब्रजनारी।
नन्दनन्दन वृषभानु किशोरी, परमानंद स्वामी अविचल जोरी।
आरती युगल किशोर की कीजै।......



४. गायत्री कवचम्

॥ विनियोग: ॥

ॐ अस्य श्री गायत्री कवचस्य ब्रह्मा ऋषिगर्यित्री छन्दो, गायत्री देवता, ॐ भू: रें बीजम्, भुव:णिं शक्ति, स्व: यं कीलकम्, गायत्री प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।

ॐ मैं श्री गायत्री कवच जिसके ब्रह्मा ऋषि हैं; गायत्री छन्द है; गायत्री देवता हैं; ॐ भू: रें बीज है; भुव: णिं शक्ति है; स्व: यं कीलक है; गायत्री के प्रसादस्वरूप सिद्धि प्राप्त करने के लिये पाठ करने का विनियोग करता हूं।

॥ ध्यानम् ॥

पञ्चवक्त्रां दशभुजां सूर्यकोटि समप्रभाम्।
सावित्रीं ब्रह्मवरदाँ चन्द्रकोटि सुशीतलाम्॥१॥
त्रिनेत्रां सितवक्त्रां च मुक्ताहार विराजिताम्,
वराभयांकुशकुशा हेम पात्रक्ष मालिका:॥२॥
शंखचक्राब्ज युगलं कराभ्यां दधतीं पराम्,

सिपंकज संस्थां च हंसारूढां सुखस्मिताम्।
ध्यात्वैवं मानसाम्भोजे गायत्री कवचं जपेत्॥३॥

जिनके पांच मुख और दस भुजाएं हैं। कोटि-कोटि भास्करों (सूर्यों) की भांति जिनकी प्रभा (प्रकाश) है। ब्रह्मा को भी जो वरदान देती हैं। जो चन्द्र के समान शीतल हैं। उनके तीन नेत्र हैं। मुख गौरवर्णीय है। उन्होंने मोतियों की माला धारण की हुई है। जो अभय का वरदान देती है। इनके हाथों में अंकुश, कुशा, पात्र, अक्षमाला, शंख, चक्र व कमल सुशोभित हो रहे हैं। इनका स्थान श्वेत कमल है और ये हंस पर आरूढ़ हुआ करती हैं। ऐसी गायत्री माता का जो मंद-मंद मुस्कुरा रही हैं मैं अपने हृदय कमल में ध्यान करते हुए गायत्री कवच का जाप करता हूं।

॥ ब्रह्मोवाचः ॥

विश्वामित्र महाप्राज्ञ गायत्री कवचं शृणु,
यस्य विज्ञानमात्रेण त्रैलोक्यं वशयेत्क्षणात्॥१॥

ब्रह्माजी ने कहा- हे बुद्धिमान विश्वामित्र! आप

गायत्री कवच सुनें, जिसके जानने व समझने मात्र से क्षणभर में ही त्रैलोक्य का वशीकरण होता है।

सावित्री मे शिरः पातु शिखायाममृतेश्वरी,
ललाटं ब्रह्म दैवत्या भ्रुवौ मे पातु वैष्णवी॥२॥

सावित्री मेरे सिर की रक्षा करें। शिखा की अमृतेश्वरी रक्षा करें। ललाट की रक्षा ब्राह्मी करें। भृकुटियों की रक्षा वैष्णवी करें।

कर्णौ मे पातु रुद्राणी सूर्या सावित्रीकाऽम्बके,
गायत्री वदनं पातु शारदा दशनच्छदौ॥३॥

कानों की रक्षा रुद्राणी करें। नेत्रों की रक्षा सूर्येश्वरी करें। मुख की रक्षा गायत्री करें तथा शारदा होंठों की रक्षा करें।

द्विजान्यज्ञप्रिया पातु रसनायां सरस्वती,
सांख्यायनी नासिकां मे कपोलौ चंद्रहासिनी॥४॥

दांतों की रक्षा यज्ञप्रिया करें। रसना की रक्षा सरस्वती करें। नासिका की रक्षा सांख्यायनी करें। कपालों की रक्षा

चन्द्रहासिनी करें।

चिबुकं वेदगर्भा च कण्ठं पात्वघनाशिनी,
स्तनौ मे पातु इन्द्राणी हृदयं ब्रह्मवादिनी।।५।।

वेदगर्भा ठोड़ी की रक्षा करें। कण्ठ की रक्षा अघनाशिनी करें। स्तनों की रक्षा इन्द्राणी करें। हृदय की रक्षा ब्रह्मवादिनी करें।

उदरं विश्वभोक्त्री च नाभौ पातु सुरप्रिया,
जघनं नारसिंही च पृष्ठं ब्रह्माण्डधारिणी।।६।।

उदर की रक्षा विश्वभोक्त्री करें। नाभि की रक्षा सुरप्रिया करें। जांघों की रक्षा नारसिंही करें। पीठ की रक्षा ब्रह्माण्डधारिणी करें।

पार्श्वौ मे पातु पद्माक्षी गुह्यं गोगोप्त्रिकाऽवतु,
ऊर्वोरोंकाररूपा च जान्वोः संध्यात्मिकाऽवतु।।७।।

पार्श्व की रक्षा पद्माक्षी करें। गुप्त अंग की रक्षा गोगोप्त्रिका करें। उरु की रक्षा ॐकारा करें। जाह्नवों की रक्षा संध्या करें।

जंघयो: पातु अक्षोभ्या गुल्फयोर्ब्रह्म शीर्षका,
सूर्या पद द्वयं पातु चन्दा पादांगुलीषु च॥८॥

जांघों की रक्षा अक्षोभ्या करें। गुल्फों की रक्षा ब्रह्मशीर्षा करें। दोनों पैरों की रक्षा सूर्या करें। पांवों की अंगुलियों की रक्षा चन्द्रा करें।

सर्वाङ्ग वेद जननी पातु मे सर्वदाऽनघा॥९॥

समस्त अंगों की रक्षा वेदमाता सदा सर्वदा ही किया करें।

इत्येतत् कवचं ब्रह्मन् गायत्र्या: सर्वपावनम्।
पुण्यं पवित्रं पापघ्नं सर्व रोग निवारणम्॥१०॥

ब्रह्मा जी कहते हैं कि यह गायत्री कवच सभी तरह से पवित्र है, पुण्य का दाता, पापों का नाशक, पवित्र तथा समस्त रोगों का निवारण करने वाला है।

त्रिसंध्यं य: पठेद्विद्वान सर्वान् कामान वाप्नुयात्,
सर्व शास्त्रार्थ तत्वज्ञ: स भवेदवेदवित्तम:॥११॥

जो विद्वान तीनों संध्याओं में इसका नियमित रूप से पाठ करता है उसकी समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं। वह

सभी शास्त्रों का तत्व (भेद) जान जाता है जिस कारण वह वेदवेत्ताओं में भी उत्तम हो जाता है।

सर्वयज्ञफलम् प्राप्य ब्रह्मान्ते समवाप्नुयात्,
प्राप्नोति जपमात्रेण पुरुषार्थाश्चतुर्विधान्॥१२॥

उसे सभी यज्ञों के समान फल प्राप्त होते हैं। वह ब्रह्मा के समान हो जाता है। इसके केवल जप मात्र से चतुर्विध पुरुषार्थ की उपलब्धि हुआ करती है।

॥ इति विश्वामित्र संहितोक्तं गायत्री कवचं
हिन्दी भाषा टीका सहितम् समाप्तम्॥



आरती गायत्री जी की

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता,
आदि शक्ति तुम अलख निरंजन जगपालक कत्री,
दु:ख शोक कलेश कलह दारिद्रय दैन्य हत्री।
ब्रह्म रूपिणी, प्रणत पालिनी जगत घात अम्बे,
भव भय हारी, जन हितकारी, सुखदा जगदम्बे।
भय हारिणी भवतारिणी, अनघे अज आनन्द राशि,
अविकारी, अघहरौ, अविचलित, अमले अविनाशी।
कामधेनु सत चित आनन्द जय गंगा गीता,
सविता की शाश्वती, शक्ति तुम सावित्री सीता।
ऋग यजु साम, अथर्वप्रणयनी, प्रणव महामहिमे।
कुण्डलिनी सहस्त्रार सुषुम्ना शोभा गुण गरिमे।
स्वाहा स्वधा, शची ब्रह्माणी राधा रुद्राणी,
जय सतरूपा, वाणी, विद्या, कमला, कल्याणी।
जननी हम हैं दीन-हीन, दु:ख दारिद्र के घेरे,
यद्यपि कुटिल, कपटी कपूत तउ बालक हैं तेरे।
स्नेहसनी करुणामयी माता चरण शरण दीजे,
बिलख रहे हम शिशु सुत तेरे दया दृष्टि कीजे।
काम, क्रोध, मद, लोभ दम्भ दुर्भाव द्वेष हरिये,
शुद्धि बुद्धि निष्पाप हृदय मन को पवित्र करिये।
तुम समर्थ सब भाँति तारिणी तुष्टि त्राता,
सत मार्ग पर हमें चलाओ, जो है सुखदाता ॐ।।





५. दिव्य काली कवचम्

॥ विनियोग मन्त्रः ॥

ॐ अस्य श्री काली कवचस्य भैरव ऋषिर्गायत्री छंदः, श्री काली देवता सद्यः शत्रु हननार्थे पाठे विनियोगः।

मैं इस दिव्य काली कवच का पाठ अपने शत्रु का हनन (शमन) करने के लिए कर रहा हूं। इस काली कवच के भैरव ऋषि हैं, गायत्री छन्द है एवं इसके देवता स्वयं काली जी हैं।

॥ काली ध्यानम् ॥

ध्यात्वा कालीं महामाया त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्,
चतुर्भुजां लोलजिह्वां पूर्ण चन्द्र निभाननाम्॥१॥

जिनके तीन नेत्र हैं, जिनके अनगिनत रू[illegible] जिनकी चार भुजाएं हैं, लाल जीभ है तथा जो पूर्ण चन्द्र के समान कान्तिवान् हैं मैं ऐसी महामाया कालीजी का ध्यान करता हूं।

नीलोत्पलदलश्यामां शत्रुसंघ विदारिणीम्।
नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं वरदं तथा ॥२॥

वो नीलकमल दल के समान श्यामवर्णा हैं। शत्रु के समूह का विनाश करने वाली हैं। इन्होंने खड्ग, नरमुण्ड तथा वरदान देने के लिए हस्तमुद्रा धारण की हुई है।

विभ्राणां रक्तवसनां घोरदंष्ट्रा स्वरूपिणीम्।
अट्टाघ्हासनिरतां सर्वदा च दिगम्बराम्॥३॥

लाल वस्त्र धारण किए हुए, भयंकर दांतों वाली जोकि बड़ी प्रचण्डता से अट्टहास करती हैं एवं जो सदा नग्न रहती हैं।

शवासनस्थितां देवी मुण्डमाला विभूषिताम्।
इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु कवचं पठेत्॥४॥

जो शव को आसन बनाकर बैठती हैं तथा जो मुण्डों की माला धारण किये रहती हैं। (इस प्रकार से ध्यान करके महादेवी का कवच पढ़ना चाहिए।)

॥ शिव उवाच: ॥

रावण के द्वारा पूछे जाने पर यह कवच भगवान शिवजी ने रावण को बताया था।

ॐ कालिका घोर रूपाद्या सर्वकाम प्रदा शुभा,
सर्व देव स्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे॥१॥

हे घोररूप धारण करने वाली, सर्वकामनाओं को प्रदान करने वाली, सदा शुभ करने वाली एवं समस्त देवों के द्वारा स्तुति किये जाने वाली कालिका देवी मेरे शत्रुओं का नाश करो।

ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणी चैव ह्रीं ह्रीं सं हं गिनी तथा,
ह्रीं ह्रीं क्षें क्षौं स्वरूपा सा सर्वदा शत्रु नाशिनी॥२॥

ह्रीं ह्रीं स्वरूपवाली, ह्रीं ह्रीं सं हं बीजरूपा तथा ह्रीं ह्रीं क्षें क्षौं स्वरूपवाली माता सदा ही मेरे शत्रुओं का नाश करती रहें।

श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणीं देवी भव बन्ध विमोचिनी,
यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुर:॥३॥

श्री अर्थात् लक्ष्मी, ह्रीं अर्थात् शक्ति, ऐं अर्थात् सरस्वती रूपिणी देवी जो भवबंधनों से मुक्त कर देती हैं आपने जिस तरह से शुम्भ-निशुम्भ नामक असुरों को मारा था।

बैरिनाशाय वन्दे ताँ कालिकाँ शंकर प्रियाम्।
ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका॥४॥

गायत्री रूपी, पार्वती रूपी, लक्ष्मी रूपी, वाराही रूपी एवं नारसिंही रूपी आदि अनेक प्रकार के रूप धारण करने वाली, शिवजी को प्रिय लगने वाली कालिके! मैं आपको नमस्कार करता हूं। आप मेरे शत्रुओं का नाश कीजिये।

कौमारी श्रीश्चचामुण्डा खाद्ययन्तु मम द्विषान्।
सुरेश्वरी घोररूपा चण्ड मुण्ड विनाशिनी॥५॥

कौमारी, लक्ष्मी (कमला), चामुण्डा मुझसे ईर्ष्या-द्वेष करने वालों का भक्षण करो। इन्द्राणी, घोररूपा, चण्ड-मुण्ड का विनाश करने वाली।

मुण्डमाला वृतांगी च सर्वत: पातु माँ सदा,
ह्रीं ह्रीं कालिके घोरदंष्ट्रे रुधिर प्रिये।।६।।

ह्रीं ह्रीं अर्थात् बारम्बार शक्ति प्रदान करने वाली, विकराल दांतों वाली, रुधिर पान से प्रसन्न होने वाली, मुण्डमाला को धारण करने वाली कालिके माता सदा-सर्वदा मेरी रक्षा करो।

।। माला मन्त्र: ।।

ॐ रुधिर पूर्ण वक्त्रे च रुधिराविताास्तिनी मम शत्रून खाद्य खाद्य, हिंसय हिंसय, मारय मारय, भिन्धि भिन्धि, छिन्धि छिन्धि, उच्चाटय उच्चाटय, द्रावय द्रावय, शोषय शोषय यातुधानिके चामुंडे ह्रीं ह्रीं वाँ वीं कालिकायै सर्व शत्रून समर्पयामि स्वाहा, ॐ जहि जहि, किटि किटि, किरि किरि, कटु कटु, मर्दय मर्दय, मोहय मोहय, हर हर मम् रिपून् ध्वंसय, भक्षय भक्षय, त्रोटय त्रोटय मातु धानिका चामुण्डायै सर्व जनान, राज पुरुषान, राजश्रियं देहि देहि, नूतनं नूतनं धान्य जक्षय जक्षय क्षाँ

क्षीं क्षूँ क्षौं क्षः स्वाहा।

॥ फल श्रुति ॥

इत्येतत् कवचं दिव्यं कथितं तव रावणः,
ये पठन्ति सदा भक्तया तेषां नश्यन्ति शत्रुवः।।७।।
वैरिणः प्रलयं यान्ति व्याधिताशय भवन्ति हि,
धनहीनः पुत्रहीनः शत्रुदस्तय सर्वदा।।८।।
सहस्त्र पठनात् सिद्धिः कवचस्य भवेत्तदा,
ततः कार्याणि सिद्धयंति नान्यथा मम् भाषितम्।।९।।

हे रावण! मैंने इस दिव्य कवच को तुम्हारे सम्मुख कहा है। जो भी मनुष्य इस दिव्य कवच का पाठ नियमित रूप से भक्तिपूर्वक करेगा, उसके शत्रुओं का नाश होगा। उसके शत्रु रोग से पीड़ित होंगे तथा धन-पुत्रादि सुखों से वह सदा हीन हो जायेंगे। इसका एक हजार बार पाठ करने से सिद्धि हो जाती है। सिद्ध हो जाने पर मारण प्रयोग में सफलता मिलती है।



श्री काली जी की आरती

मंगल की सेवा, सुन मेरी देवा हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट धरे।
सुन जगदम्बे न कर विलम्बे, भक्तन के भण्डार भरे।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे।
बुद्धि विधाता तू जग माता, मेरा कारज सिद्ध करे।
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन पड़े।
जब-जब भीड़ पड़ी भक्तन पर, तब-तब आय सहाय करे।

सन्तन..................

बार-बार तैं सब जग मोह्यो, तरुणी रूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावे, कहीं भार्या बनकर भोग करे।
सन्तन सुखदाई सदा सहाई, सन्त खड़े जयकार करें।

सन्तन..................

ब्रह्मा, विष्णु, महेश सहस्त्रफल लिए भेंट तेरे द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र फिरे।
जब-जब भीड़ पड़ी भक्तन पर तब-तब आय सहाय करे।

सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली जय काली कल्याण करे।
वार शनिश्चर कुमकुम वरणी, जब लूकड़ पर हुक्म करे।
खड़ग खप्पर त्रिशूल हाथ लिए, रक्त-बीज कूं भस्म करे।
सुन जगदम्बे न कर विलम्बं सन्तन के भंडार भरे।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशाली जय काली कल्याण करे।
आदितवार आदि को बीरा, जन अपने को कष्ट हरे।
कोप होय कर दानव मारे, चण्ड-मुण्ड सब चूर करे।
जब तुम देखो दया रूप हो, पल में संकट दूर करे।
संतन प्रतिपाल सदा खुशाली जय काली कल्याण करे।
सौम्य स्वरूप धरयो मेरी माता, जन की अरज कबूल करे।
सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी, अटल भवन में राज्य करे।
दर्शन पावें मंगल गावें, सिद्ध साध तेरी भेंट धरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली जय काली कल्याण करे।
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे, शिवशंकर जी ध्यान धरें।
इन्द्र कृष्ण तेरी करें आरती, चंवर कुबेर डुलाय रहे।
जय जननी जय मातु भवानी, अचल भवन में राज्य करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली जय काली कल्याण करे।





६. हनुमान कवचम्

॥ रामदास उवाचः ॥

एकदा सुखमासीनं शंकरं लोकशंकरम्,
प्रपच्छ गिरिजा कान्तं कर्पूरधवलं शिवं॥१॥

रामदास ने कहा-एक बार कर्पूर के समान अत्यन्त शुभ्र वर्णमयी लोक कल्याणी सुखासन में बैठे शिवजी से माता पार्वती जी ने पूछा-

॥ पार्वत्युवाचः ॥

भगवान् देवदेवेश लोकनाथ जगत्प्रभो,
शोकाकुलानां लोकानां केन रक्षा भवेद्भव॥२॥
संग्रामे संकटे घोरे भूत प्रेतादि के भये,
दुःख दावाग्नि संतप्तचेतसां दुःखभागिनाम्॥३॥

पार्वती जी ने पूछा-हे भगवान्! हे देव देवेश! हे लोकनाथ! हे जगत के प्रभु! युद्ध के संकट वाले समय भूत-प्रेत से पीड़ित हो जाने पर, दुःख से व्याकुल हो जाने पर और शोकादि के बढ़ जाने पर सन्तप्त हृदयों की रक्षा

किस प्रकार से होगी।

॥ महादेव उवाचः ॥

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया,
विभीषणाय रामेण प्रेम्णां दत्तं च युत्पुरा॥४॥

महादेव जी ने बताया-सुनो देवी! लोक के कल्याणार्थ भगवान श्रीराम ने विभीषण को जो बताया था-

कवच कपिनाथस्य वायुपुत्रस्य धीमतः,
गुह्यं तत्ते प्रवक्ष्यामि विशेषाच्छ्रणु सुन्दरी॥५॥

वायु पुत्र कपिनाथ अर्थात् हनुमान कवच बताया था, जो अत्यन्त गोपनीय है। इस विशेष कवच को मैं तुम्हें विस्तारपूर्वक बताता हूं, हे सुन्दरी सुनो-

॥ विनियोगः ॥

ॐ अस्य श्री हनुमानकवच स्तोत्रमन्त्रस्य श्री रामचन्द्र ऋषिः, श्री वीरो हनुमान् परमात्मां देवता, अनुष्टुप छन्दः, मारुतात्मज इति बीजम्, अंजनीसुनुरीति शक्तिः, लक्ष्मण प्राणदाता इति जीवः, श्रीराम भक्ति

रिति कवचम्, लंकाप्रदाहक इति कीलकम्, मम सकल कार्य सिद्धयर्थे जपे विनियोग:॥६॥

॥ मन्त्र: ॥

ॐ ऐं श्रीं ह्राँ ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः॥७॥

इस मन्त्र का यथाशक्ति जाप करें।

॥ करन्यास: ॥

ॐ ह्राँ अंगुष्ठाभ्यां नम:॥८॥

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नम:॥९॥

ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नम:॥१०॥

ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नम:॥११॥

ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नम:॥१२॥

ॐ ह्रः करतल करपृष्ठाभ्याँ नम:॥१३॥

॥ हृदयादिन्यास: ॥

ॐ अंजनी सूतवे नम: हृदयाय नम:॥१४॥

ॐ रुद्रमूर्तये नम: शिरसे स्वाहा॥१५॥

ॐ वातात्मजाय नम:, शिखायै वषट्॥१६॥

ॐ रामभक्तिरताय नम:, कवचाय हु म्॥१७॥

ॐ वज्र कवचाय नमः, नेत्र त्रयाय वौषट्॥१८॥
ॐ ब्रह्मास्त्र निवारणाय नमः, अस्त्राय फट्॥१९॥

॥ ध्यानम् ॥

ॐ ध्यायेद बालदिवाकरद्युतिनिभंदेवारिदर्पापहं,
देवेन्द्र प्रमुख प्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा॥२०॥
सुग्रीवादि समस्त वानरयुतं सुव्यक्ततत्वप्रियं,
संरक्तारुण लोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम्॥२१॥

प्रात:काल उदय हो रहे सूर्य के समान कांति वाले, देवताओं के शत्रु असुरों के घमंड का नाश करने वाले, देवतादि प्रमुख, जो अपने प्रचण्ड तेज से दमक रहे हैं, सुग्रीव आदि समस्त वानरों से घिरे हुए, ब्रह्मतत्त्व को प्रत्यक्ष करने वाले, लाल-लाल आंखों वाले, पीताम्बर से अलंकृत पवन देवता के पुत्र हनुमानजी का ध्यान करना चाहिए।

उद्यन्मार्तण्ड कोटि प्रकट रुचि युतं चारुबीरासनस्थं, मौंजी यज्ञोपवीताऽऽभरण रुचि शिखा शोभितं कुण्डलाढ्यम्।२२॥

भक्तानामिष्टदम्न प्रणतमुनजनं वेदनादप्रमोदं,

ध्यायेद्देवं विधेय प्लवगकुलपतिं मोक्षपदीभूतवर्धिम्॥२३॥

उदय हो रहे करोड़ों सूर्यों के प्रकाश के समान कांतिमान्, सुन्दर वीरासन में शोभित, अत्यन्त रुचि से मौंजी तथा मूंज का जनेऊ धारण करने वाले, सुन्दर कुण्डलों से सुशोभित, भक्तों को मनचाहा वर देने वाले, मुनियों द्वारा वन्दित, वेदों के शब्द से अपार हर्षित होने वाले, भगवान श्रीराम के सेवक, वानरों के प्रमुख एवं अत्यधिक विस्तृत समुद्र को अचानक लांघ जाने वाले हनुमान जी का ध्यान करना चाहिए।

वज्राङ्गं पिंगकेशाढ्यं स्वर्णकुण्डल मण्डितम्,
उद्यदक्षिण दोर्दण्डं हनुमन्तं विचिन्तये॥२४॥
स्फटिकाभं स्वर्णकान्तिं द्विभुजं च कृताञ्जलिम्,
कुण्डलद्वय संशोभि मुखाम्भोजं हरिं भजे॥२५॥

वज्र के समान अत्यन्त पुष्ट अंगों वाले, जिनके केश पीले हैं। जिन्होंने सोने के कुण्डल धारण किये हुए हैं। जिनका दाहिना हाथ ऊपर को उठा हुआ है। स्फटिक मणि के समान तेजयुक्त, स्वर्ण की भांति देदीप्यमान, दो भुजाधारी, जिन्होंने

हाथों की अंजलि बना रखी है। ऐसे हनुमान जी का ध्यान करता हूं।

॥ हनुमान मन्त्रः ॥

निम्नलिखित मन्त्र अत्यन्त सावधानी से जपें।

ॐ नमो भगवते हनुमदाख्य रुद्राय सर्व दुष्ट जन मुख स्तम्भनं कुरु कुरु ॐ ह्रॉं ह्रीं ह्रूं ठं ठं ठं फट् स्वाहा, ॐ नमो हनुमते शोभिताननाय यशोऽलंकृताय अंजनी गर्भ सम्भूताय रामलक्ष्मणनंदकाय कपि सैन्य प्राकाशय पर्वतोत्पाटनाय सुग्रीवसाह्य करणाय परोच्चाटनाय कुमार ब्रह्मचर्याय गम्भीर शब्दोदयाय ॐ ह्रॉं ह्रीं ह्रूं सर्व दुष्ट ग्रह निवारणाय स्वाहा।

ॐ नमो हनुमते सर्व ग्रहान्भूत भविष्यद्वर्तमान दूरस्थ समीप स्थान् छिंधि छिंधि भिंधि भिंधि सर्व काल दुष्ट बुद्धिमुच्चाटयोच्चाटय परबलान क्षोभय क्षोभय मम सर्व कार्याणि साधय साधय ॐ ह्रॉं ह्रीं ह्रूं फट् देहि ॐ शिव सिद्धि ॐ ह्रॉं ह्रीं ह्रूँ स्वाहा।

ॐ नमो हनुमते पर कृत यन्त्र मन्त्र पराहङ्कार भूत प्रेत पिशाच पर दृष्टि सर्व तर्जन चेटक विद्या सर्व ग्रह भयं निवारय निवारय, वध वध, पच पच, दल दल, विलय विलय सर्वाणिकुयन्त्राणि कुट्टय कुट्टय, ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ स्वाहा।

ॐ नमो हनुमते पाहि पाहि ऐहि ऐहि सर्व ग्रह भूतानां शाकिनी डाकिनीनां विषमदुष्टानां सर्वेषामकर्षय कर्षय, मर्दय मर्दय, छेदय छेदय, मृत्यून् मारय मारय, शोषय शोषय, प्रज्वल प्रज्वल, भूतमण्डल, पिशाच् मण्डल, निरसनाय भूत ज्वर, प्रेत ज्वर, चातुर्थिक ज्वर, विष्णु ज्वर, महेश ज्वरं, छिन्धि छिन्धि, भिंधि भिंधि, अक्षि शूल, पक्ष शूल, शिरोऽभ्यंतर शूल, गुल्म शूल, पित्त शूल, ब्रह्मराक्षस कुल पिशाच कुलच्छेदनं कुरु प्रबल नाग कुल।

विषं निर्विषं कुरु कुरु झटति झटति, ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूं फट् सर्व ग्रह निवारणाय स्वाहा।

ॐ नमो हनुमते पवन पुत्राय वैश्वानर पार दृष्टि,

घोर दृष्टि हनुमदाज्ञा स्फुर ॐ स्वाहा, ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूं फट् घे घे स्वाहा।

॥ श्रीराम उवाचः ॥

हनुमान पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः,
पातु प्रतीच्यां रक्षोघ्नः पातु सागरपारगः॥१॥
उदीच्यामूर्ध्वगः पातु केसरी प्रिय नन्दनः,
अधस्ताद् विष्णु भक्तस्यु पातु मध्यं च पावनिः॥२॥
अवान्तर दिशः पातु सीता शोकविनाशकः,
लंकाविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरंतरम्॥३॥

श्रीराम ने कहा- पूर्व में हनुमान, दक्षिण में पवनपुत्र, पश्चिम में रक्षोघ्न, उत्तर में सागरपारग, ऊपर से केसरीनंदन, नीचे से विष्णुभक्त, मध्य में पावनि, अवान्तर दिशाओं में सीता शोकविनाशक तथा समस्त विपत्तियों में लंका विदाहक मेरी रक्षा करें।

सुग्रीव सचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः,
भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम्॥४॥

नेत्रेच्छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः,
कपोले कर्णमूले च पातु श्री राम किंकरः॥५॥
नासाग्रमञ्जनीसूनु पातु वक्त्रं हरीश्वर,
वाचं रुद्राप्रिय पातु जिह्वा पिंगल लोचनः॥६॥

सचिव सुग्रीव मेरे मस्तक की, वायुनंदन भाल की, महावीर भौंहों के मध्य की, छायापहारी नेत्रों की, प्लवगेश्वर कपोलों की, रामकिंकर कर्णमूल की, अंजनीसुत नासाग्र की, हरीश्वर मुख की, रुद्रप्रिय वाणी की तथा पिंगललोचन मेरी जीभ की सदैव रक्षा करें।

पातु दन्तान फाल्गुनेष्टाश्चिबुकं दैत्यापाहदा,
पातु कण्ठं च दैत्यारीः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः॥७॥
भुजौ पातु महातेजाः करौ पातु चरणायुधः,
नखान नखायुधः पातु कुक्षिं पातु कपीश्वरः॥८॥
वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः,
लंकाविभञ्जनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम्॥९॥

फाल्गुनेष्ट मेरे दांतों की, दैत्यापाहदा चिबुक की,

दैत्यारी कंठको, सुरर्चित मेरे कन्धों की, महातेजा भुजाओं की, चरणायुध हाथों की, नखायुध नखों की, कपीश्वर कांख की, मुद्रापहारी वक्ष की, भुजायुध अगल-बगल की, लंकाविभंजन मेरी पीठ की सदैव रक्षा करें।

नाभिं च रामदूतस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः,
गुह्यं पातु महाप्राज्ञो लिंग पातु शिव प्रियः॥१०॥
ऊरु च जानुनी पातु लंका प्रासाद भंजनः,
जंघे पातु कपिश्रेष्ठो गुल्फौ पातु महाबलः॥११॥
अचलोद्धारकः पातु पादौ भाष्कर सन्धिभिः,
अङ्गान्यमित सत्त्वाढयः पातु पादांगुलीस्तथा॥१२॥

रामदूत नाभि की, नीलात्मज कमर की, महाप्राज्ञा गुदा की, शिवप्रिय लिंग की, लंकाप्रसाद भंजन जानु एवं उरु की, कपिश्रेष्ठ जंघा की, महाबल गुल्फों की, अचलोद्धारक पैरों की, भाष्कर संधियों की, अमितसत्त्वाढय पैर की, अंगुलियों की सदैव रक्षा करें।

सर्वाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान्,
हनुमत्कवच यस्तु पठेद् विद्वान विचक्षण:॥१३॥
स एव पुरुष श्रेष्ठो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति,
त्रिकालमेककालं वा पठेन्मास्त्रयम् सदा॥१४॥
सर्वानरिपुन क्षणाजित्वा स पुमान्श्रियमाप्नुयात्,
मध्यरात्रे जले स्थित्वा सप्तधारम् पठेद यदि॥१५॥

महाशूर बाकी सभी अंगों की, आत्मवान मेरे रोमकूपों की सदैव रक्षा करें। जो विद्वान इस विलक्षण कवच का पाठ करता है वह भक्ति एवं मुक्ति को प्राप्त करता है। एक समय या तीनों समय प्रतिदिन जो साधक तीन महीने तक इसका निरंतर पाठ करता है, वह क्षणभर में ही शत्रु के समूह को पराजित कर लक्ष्मी को प्राप्त करता है। आधी रात के समय जल के मध्य खड़े होकर इसके सात पाठ करने से क्षय, अपस्मार, कुष्ठ तथा तिजारी ज्वर का नाश होता है।

क्षयाऽपस्मार कुष्ठादि ताप ज्वर निवारणम्,
अश्वत्थमूलेऽर्कवारे स्थित्वा पठति यः पुमान्॥१६॥

अचलां श्रियमाप्नोति संग्रामे विजयं तथा,
लिखित्वा पूजयेद यस्तु सर्वत्र विजयी भवेत्॥१७॥
यः करे धारयेन्नित्यं स पुमान् श्रियमाप्नुयात्,
विवादे द्यूतकाले च द्यूते राजकुले रणे॥१८॥
दशवारं पठेद् रात्रौ मिताहारो जितेन्द्रियः,
विजयं लभते लोके मानुषेषु नराधिपः॥१९॥

रविवार के दिन अश्वत्थ वृक्ष की जड़ के पास बैठकर इसका पाठ करने से युद्ध में विजय तथा अचल लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इसे लिखकर इसकी पूजा करने पर सर्वत्र विजय प्राप्त होती है। इसे धारण करने से लक्ष्मी प्राप्त होती है। वाद-विवाद, जुआ, राजघराने एवं युद्ध में इसके दस पाठ करने से विजय प्राप्त होती है।

भूत प्रेत महादुर्गे रणे सागर सम्प्लवे,
सिंह व्याघ्रभये चोग्रे शर शस्त्रास्त्र पातने॥२०॥
श्रृंखला बन्धने चैव काराग्रह नियन्त्रणे,
कायस्तोभे वह्नि चक्रे क्षेत्रे घोरे सुदारुणे॥२१॥
शोके महारणे चैव बालग्रहविनाशनम्,
सर्वदा तु पठेन्नित्यं जयमाप्नुत्यनसंशयम्॥२२॥

भूत, प्रेत, महादुःख, युद्ध, समुद्र, सिंह, व्याघ्र, शस्त्रास्त्र के मध्य घिर जाने पर, जंजीरों से बांधे जाने पर, कारागार में जाने पर, आग में फंसने, शरीर में पीड़ा होने, शोकादि व ब्रह्मग्रह के निवारण के लिए इसका पाठ प्रतिदिन करना चाहिए। इस पाठ को करने से निश्चय ही विजय प्राप्त होती है इसमें बिल्कुल भी संशय नहीं है।

भूर्जे व वसने रक्ते क्षीमे व ताल पत्रके,
त्रिगन्धे नाथ मश्यैव विलिख्य धारयेन्नरः॥२३॥
पञ्च सप्त त्रिलोहैर्वा गोपित कवचं शुभम्,
गले कटयां बाहुमूले कण्ठे शिरसि धारितम्॥२४॥
सर्वान्कामन्वाप्नुयात् सत्यं श्रीराम भाषितं॥२५॥

भोजपत्र, लाल रेशमी वस्त्र, ताड़पत्र पर इस कवच को त्रिगन्ध की स्याही से लिखकर इसे धारण करना चाहिए। पांच, सात या तीन लोहे के मध्य रखकर गले में, कमर में, भुजा पर या सिर पर धारण करने से धारणकर्त्ता की सारी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। यह श्रीराम ने कहा है।



आरती हनुमान जी की

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग दोष जाके निकट न झांकै।।

अंजनि पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये।।

लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे। सिया राम जी के काज संवारे।।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि संजीवन प्राण उबारे।।
पैठि पाताल तोरि जमकारे। अहिरावण की भुजा उखारे।।

बांये भुजा असुर दल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे।।
सुर नर मुनि जन आरती उतारें। जै जै जै हनुमान उचारें।।

कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अंजना माई।।
जो हनुमान जी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परम पद पावै।।

लंका विध्वंस कियो रघुराई। तुलसी दास स्वामी कीरति गाई।।
आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।



७. विघ्नविनाशक गणेश कवचम्

॥ मुनि उवाचः ॥

ध्यायेत् सिंहगतं विनायकममुंदिग्बाहुमाधे युगे,
त्रेतायां तु मयूरवाहनममुंषडबाहुकं सिद्धिदम्॥१॥
द्वापरके तु गजाननं युगभुजं रक्तांग रागं विभुं,
तुर्ये तु द्विभुजं सितांगरुचिरं सर्वार्थदं सर्वदा॥२॥

सतयुग में सिंह पर सवार आठ हाथों वाले विनायक

का ध्यान करें। त्रेतायुग में सिद्धिदायक, छः हाथों वाले मयूर (मोर) पर सवार गणेश जी का ध्यान करें। द्वापर युग में चार हाथों वाले गणपति लाल अंगारे जैसी दमकवाले तथा कलयुग में दो हाथ वाले श्वेत अंग वाले जो सर्वदा समस्त कार्य पूर्ण करते हैं ऐसे गणेशजी का ध्यान करें।

विनायकः शिखां पातु परमात्मा परात्परः,
अति सुन्दरकायस्तु मस्तकं सुमहोत्कटः॥३॥

परात्पर परमात्मा विनायक चोटी (शिखा) की रक्षा करें। अधिक सुन्दर शरीर वाले सुमहोत्कट मस्तक की रक्षा करें।

ललाटं कश्यपः पातु भ्रूयुगं तु महोदरः,
नयने भाल चंद्रस्तु गजास्यस्त्वोष्ठपल्लवौ॥४॥

ललाट की कश्यप, भौंहों की महोदर, आंखों की भालचंद्र और दोनों होंठों की रक्षा गजमुख (हाथी जैसे मुख वाले) करें।

जिह्वां पातु गणाक्रीडश्चिबुकं गिरिजासुतः,
वाचं विनायकः पातु दंतान् रक्षतु दुर्मुखः॥५॥

जिह्वा की रक्षा गणक्रीड, चिबुक की रक्षा गिरिजानन्दन, वाणी की रक्षा विनायक और दांतों की रक्षा दुर्मुख करें।

श्रवणौ पाशुपाणिस्तु नासिकां चिंतितार्थदः,
गणेशस्तु मुखं कंठं पातु देवो गणञ्जयः॥६॥

पाशपाणि दोनों हाथों की, इच्छित फल देने वाले नाक की, गणेश मुख की और गणों को जीतने वाले देव कण्ठ की रक्षा करें।

स्कन्धौ पातु गजस्कन्धः स्तनौ विघ्नविनाशनः,
हृदयं गणनाथस्तु हेरंबो जठरं महान्॥७॥

गजस्कन्ध दोनों कंधों की रक्षा करें, स्तनों की विघ्न-विनाशक, हृदय की गणनाथ और हेरंब पेट की रक्षा करें।

धराधरः पातु पार्श्वौ पृष्ठं विघ्नहरः शुभः,
लिंगं गुह्यं सदा पातु वक्रतुंडो महाबलः॥८॥

दोनों पार्श्व भाग की धराधर, पीठ की विघ्नहर और लिंग एवं गुह्य की रक्षा महाबली वक्रतुण्ड करें।

मणक्रीडो जानु जंघे उरु मङ्गलमूर्तिमान्,
एकदन्तो महाबुद्धिः पादौ गुल्फौ सदावतु॥९॥

घुटनों तथा जंघाओं की रक्षा गणों से खेलने वाले करें, नितम्ब की रक्षा मंगलमूर्ति करें और पैरों एवं गुल्फ की रक्षा महाबुद्धि वाले एकदन्त करें।

क्षिप्रप्रसादनो बाहू पाणी आशाप्रपूरकः,
अंगुलीश्च नखान्पातु पद्महस्तोरिनाशनः॥१०॥

बाजुओं की रक्षा शीघ्र प्रसन्ना, हाथों की रक्षा आशापूरक करें, अंगुली तथा नाखूनों की रक्षा हाथ में कमल धारण करने वाले शत्रुनाशक करें।

सर्वाङ्गाणि मयूरेशो विश्वव्यापी सदावतु,
अनुक्तमपि यत्स्थानं धूम्रकेतुः सदावतुः॥११॥

समस्त अंगों की रक्षा विश्वव्यापी मयूरेश करें। अकथित स्थानों की रक्षा धूम्रकेतु करें।

आमोदस्त्वग्रतः पातु प्रमोदः पृष्ठतोऽवतु,
प्राच्यां रक्षतु बुद्धिश आग्नेयां सिद्धिदायकः॥१२॥

आगे आमोद, पीछे प्रमोद, पूर्व में बुद्धीश और आग्नेय में सिद्धिदायक रक्षा करें।

दक्षिणस्यामुमापुत्रो नैऋत्यां तु गणेश्वरः,
प्रतीच्यां विघ्नहर्ताऽव्याद्वायव्यां गजकर्णकः॥१३॥

दक्षिण को उमा पुत्र, नैर्ऋत्य में गणेश्वर, पश्चिम में विघ्नहर्त्ता तथा वायव्य में गजकर्णक रक्षा करें।

कौंबेर्या निधिपः पायादीशान्यामीशनन्दनः,
दिवोऽव्यादेकदन्तस्तु रात्रौ संध्यासु विघ्नहृत्॥१४॥

उत्तर में निधिप, ईशान में ईशनन्दन, दिन में एकदन्त, रात्रि में तथा संध्याओं में विघ्नहर्त्ता रक्षा करें।

राक्षसासुर वेताल ग्रह भूत पिशाचतः,
पाशांकुशधरः पातु रजः सत्वतमः स्मृतीः॥१५॥

राक्षस, असुर, वेताल, ग्रह, भूत, पिशाच से पाशांकुश धारण करने वाले, राजोगुण, सतोगुण तथा तमोगुण से युक्त रक्षा करें।

ज्ञानं धर्म च लक्ष्मीं च लज्जा कीर्ति तथा कुलम्,
वपुर्धनं च धान्यं च गृह दारान्सुतान्सखीन्॥१६॥

ज्ञान, धर्म, लक्ष्मी, लज्जा, कीर्ति, कुल, शरीर, धन, धान्य, घर, पत्नी, पुत्र और मित्र की रक्षा....

सर्वायुधधरः क्षेत्रं मयूरेशोऽवतात्सदा,

कपिलोऽजाविकं पातु गजाश्वान् विकटोवतु॥१७॥

सर्वायुध करें। स्थान की रक्षा सदा मयूरेश करें। बकरी तथा भेड़ की रक्षा कपिल करें तथा हाथी एवं घोड़ों की रक्षा विकट करें।

भूर्जपत्रे लिखित्वेदं य: कण्ठे धारयेत्सुधी:,
न भयं जायते तस्य यक्ष रक्ष: पिशाचत:॥१८॥

इस कवच को भोजपत्र पर लिखकर जो व्यक्ति कण्ठ में धारण करता है, उसको यक्ष, राक्षस तथा पिशाच का भय कभी नहीं सताता।

त्रिसन्ध्यं जपते यस्तु वज्रसार तनुर्भवेत्,
यात्रा काले पठेद्यस्तु निर्विघ्नेन फलं लभेत्॥१९॥

इस कवच को जो कोई विद्वान तीनों सन्ध्याओं में पढ़ता है, उसका शरीर वज्र के समान कठोर हो जाता है। यात्रा के समय पढ़ने से कार्य निर्विघ्न सफल होता है।

युद्धकाले पठेद्यस्तु विजयं चाप्नुयाद ध्रुवम्,
मारणोच्चाटनाकर्ष स्तम्भ मोहन कर्मणि॥२०॥

युद्ध के समय इस कवच को पढ़ने पर अवश्य ही विजय प्राप्त होती है, मारण, उच्चाटन, आकर्षण, स्तम्भन,

मोहन आदि कर्म में-

सप्तवारं जपेदेतद्दिनानामेक विंशतिम्,
तत्फलमवाप्नोति साधको नात्र संशय:॥२१॥

इस कवच को सात बार 21 दिनों तक जपने से उपर्युक्त फल साधक को प्राप्त होते हैं, इसमें जरा भी संदेह नहीं है।

एकविंशतिवारं च पठेत्तावद्दिनानि य:,
कारागृह गतं सद्यो राज्ञवध्यं च मोचयेत्॥२२॥

इस कवच को 21 दिनों तक 21 बार जो रोजाना पढ़ता है, वह जेल के बंधन से मुक्त हो जाता है।

राजा दर्शन वेलायां पठेदेत त्रिवारत:,
स राजानं वशं नीत्वा प्रकृतिञ्च सभां जयेत्॥२३॥

राजा के दर्शन के समय तीन बार पढ़ने से राजा वश में हो जाता है और पाठ करने वाला व्यक्ति सभा जीत जाता है।

इदं गणेश कवचं कश्यपेनसमीरितम्,
मुद्गलाय च त्रैनाथ माण्डव्याय महर्षये॥२४॥

यह गणेश कवच कश्यप ने मुद्गल को बताया था। मुद्गल ने महर्षि माण्डव्य को बताया था।

मह्यं स प्राह कृपया कवचं सर्वसिद्धिदम्,
न देयं भक्ति हीनाय देयं श्रद्धावते शुभम्॥२५॥

कृपावश मैंने यह सर्वसिद्धि देने वाला कवच बताया है। यह कवच पापी व्यक्ति (नास्तिक, भक्तिहीन) को नहीं बताना चाहिए। जो श्रद्धावान् हो केवल उसे ही बताएं।

अनेनास्य कृता रक्षा न बाधाऽस्य भवेत्क्वचित्,
राक्षसा सुरवेताल दैत्य दानव सम्भवा॥२६॥

इस कवच से जो सुरक्षित रहता है उसे राक्षस, असुर, वेताल, दैत्य, दानव आदि से उत्पन्न किसी प्रकार की बाधा नहीं सताती है।

॥ इति श्री गणेशपुराणे हिन्दी भाषा टीका सहित विघ्नविनाशक गणेश कवचम् सम्पूर्णम् ॥



श्री गणेशजी की आरती

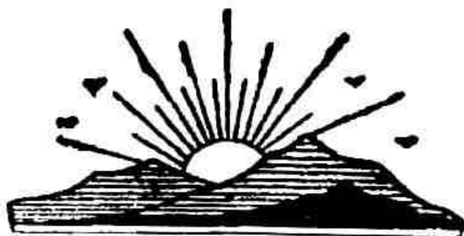
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता थारी पार्वती पिता महादेवा।

एक दन्त दयावन्त चार भुजाधारी,
माथे सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी।
जय गणेश.......!!

हार चढ़े फूल चढ़ें और चढ़े मेवा,
लड्डुन का भोग लगे संत करें सेवा।
जय गणेश.......!!

अन्धन को आंख देत, कोढ़िन को काया,
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।
जय गणेश.......!!

सूरश्याम शरण आया, सुफल कीजे सेवा,
हम सब तेरी शरण पड़े हैं, पार लगा दो खेवा।
जय गणेश.......!!



८. शरीरारोग्यदं दिव्यं सूर्यकवचम्

॥ श्री याज्ञवल्कय उवाच: ॥

श्रृणुष्व मुनिशार्दूल सूर्यस्य कवचं शुभम्,
शरीरारोग्यं दिव्यं सर्व सौभाग्यदायकम्॥१॥

श्री याज्ञवल्क्य जी बोले-हे मुनिश्रेष्ठ! सूर्य के शुभ देने वाले कवच को सुनो जो शरीर को आरोग्यता देने वाला तथा सम्पूर्ण दिव्य सौभाग्य को प्रदान करने वाला है।

देदीप्यमान मुकुटं स्फुरन्मकर कुण्डलम्,
ध्यात्वा सहस्त्र किरणं स्तोत्र मेतदुदीरयेत्॥२॥

चमकते हुए मुकुट वाले, डोलते हुए मकराकृति कुण्डल वाले, हजारों किरण वाले सूर्य का ध्यान करते हुए यह स्तोत्र आरंभ करें।

शिरो में भास्करः पातु ललाटं मे ऽमित द्युतिः,
नेत्रे दिनमणिः पातु श्रवणे वासरेश्वरः॥३॥

मेरे सिर की रक्षा भास्कर करें, अपरिमित कांति वाले ललाट की रक्षा करें, आंखों की रक्षा दिनमणि करें तथा कान की रक्षा दिन के ईश्वर करें।

घ्राणं धर्म घृणिः पातु वदनं वेदवाहनः,
जिह्वां मे मानदः पातु कण्ठं मे सुर वंदितः॥४॥

मेरी नाक की रक्षा धर्मघृणि करें, मुख की रक्षा वेदवाहन करें, जिह्वा की रक्षा मानद करें तथा कण्ठ की रक्षा देववन्दित करें।

स्कन्धौ प्रभाकरः पातु वक्षः पातु जनप्रियः,
पातु पादौ द्वादशात्मा सर्वाङ्ग सकलेश्वरः॥५॥

मेरे कन्धों की रक्षा प्रभाकर करें, छाती (हृदय) की

रक्षा सर्वजनप्रिय करें, पैरों की रक्षा बारह आत्मा वाले करें तथा सभी अंगों की रक्षा सबके ईश्वर करें।

सूर्य रक्षात्मकं स्तोत्रं लिखित्वा भुजपत्रके,
दधाति यः करे तस्य वशगाः सर्व सिद्धयः॥६॥

इस सूर्य रक्षात्मक स्तोत्र को जो भी व्यक्ति भोजपत्र पर लिखकर भुजा में धारण करता है, सारी सिद्धियां उसके वश में हो जाती हैं।

सुस्नातो यो जपेत् सम्यग्योधीते स्वस्थ मानसः,
स रोग मुक्तो दीर्घायुः मुखं पुष्टिं च विंदति॥७॥

प्रातःकाल स्नान करके जो कोई स्वस्थ मन-हृदय से इस कवच का पाठ करता है वह रोग से मुक्त हो दीर्घायु होता है, सुख तथा पुष्टि को प्राप्त करता है।

॥ इति श्री याज्ञवल्क्य विरचित हिन्दी भाषा टीका
सहित सूर्य कवचम् सम्पूर्णम् ॥

